

THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

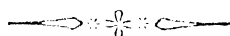
-The TFIC Team.

जैन शिलोका संग्रह पुस्तक



ओ पुस्तक

जैन धर्मी श्रावक लोकां ने जणवा
वाचवाने अर्थे योग्यजाणीने



नाना दादाजी गुंड इणने.

“ सौजन्यमित्र ” छापायंत्रमाहि छापायोडे



संवत् १९४७

ओ पुस्तक पुना पेठ नानाकी आठे

भाई भगवानदामजी केशरचंदजी

नाहारका दुकान उपर मीलसी.

किंमत पांच आना.

॥ अथ शिलोका संग्रह प्रारंभः ॥



॥ अथ लिख देवजीको शिलोको लिख्यते ॥

सरसति माता द्यो मुज वाणी, समरुं जिने
शासन वरदानी वाणी ॥ नानिराया ने मरुदे
वा राणी, कुखें उपना केवल नाणी ॥ १ ॥ च
वदे सुपनमां रात विहाणी, बीजे शाखें तो सब
ली वखाणी ॥ मेंतो संक्षेपें कीयोठे जाणी, हिवे
वरदीओ माता ब्रम्हाणी ॥ २ ॥ पूरे महिने बा
लक जायो, उपन कुमारी मिलीने गायो ॥ चो
शठ इंद्रादिक ओछव आवे, मेरु जइने नीरें न्ह
घरावे ॥ ३ ॥ बलतो मावित्रें ओछव कीधो, ना
म ऋषज कुंअर दीधो ॥ माता धवरावे नवरावे
गावे, मोटेरा हुआ मेवा खवरावे ॥ ४ ॥ आप
णें इतलानां नाम न आवे, कहेशुं विचारी ते न
ली जावे ॥ घेवर जिलेबी लाडु लाखीणा, पेंडा प
तासां फल फलतां फेणा ॥ ५ ॥ रूडा दहिंथरां
देवगरां थाली, मांहे मरकीने सेव सुंआली ॥ सा
करनो शीरो लापशी तरकारी, मरुदेवा माता
पीरशे दशवारी ॥ ६ ॥ मातायें बालकनुं मन

न लाधुं, बेठो रीशाणो थोडुंशुं खाधुं ॥ गंडी ए
 ठुंने अलगो जइ बेठो, माता मन मांहे संदेह
 पेठो ॥ ७ ॥ मीठे वचनें करी माता मनावे, ए
 टले आकाशें इंद्राणी आवे ॥ ऋषज रीशाणो
 आवो मनावो, अपणे नाचिने गुण गीत गावो
 ॥ ८ ॥ आदीश्वर आगल इंद्राणी आवे, नवर
 स नाटकनां बाजां बजावे ॥ अहो आडंबर जा
 इ जाइ, धन धन सुकृत तेहनी कमाइ ॥ ९ ॥
 नाटके नानडिओ खुशाल कीधो, एके इंद्राणी
 यें उठंगें लीधो ॥ बीजी मिलीने बोकलो दीधो, त्री
 जी कहेवे इम शुं कीधो ॥ १० ॥ पुढे प्रभु केम
 रीशाणो कीधो, ऋषज मनावी माताने दीधो ॥
 मरुदेवा पूढे केम रीशाणा आइ, शाक सघलां
 मोमां केम लाइ ॥ ११ ॥ पिरस्या पापड नजी
 आंने जाजी, शाक बनाव्या चतुराइ जाजी ॥ का
 कडी कंकोना कारेलां केला, काची केरीने कखंदां
 जेलां ॥ १२ ॥ कोलां कालिंगा करपटा जेलां, बा
 पयां बत्रीशे शाक शमेला ॥ शक पाक ते
 सघलां दीधां, आपें इंद्राणीयें हाथ शुं कीधां ॥
 ॥ १३ ॥ जुगलिया त्यारें कांइ न जाणे, सुर द्रु

म पासेंथी मांगीनें आणे ॥ खावे गावे नें कांइ
 न कमावे, जाजुं जीवेनें सदगतियें जावें ॥ १४ ॥
 अठीने आदीश्वर उपना जाणी, सौधर्म इंद्रें अ
 वधें तव जाणी ॥ नाजिराजानें आगले जइ, जु
 गतीयें जइ वातज कइ ॥ १५ ॥ ऋषजने जइ
 राज तुमें थापो, पाये लागीने पदवीज आपो ॥
 जुगलिया मिलिया महोत्सव करवा, ऋषज बे
 सारी गया नीर जरवा ॥ १६ ॥ अठीने इंद्रें मि
 ली कामज कीधुं, ठत्र चामर ने सिंहासन दीधुं
 ॥ जगमग ज्योतबे पीला पीतांबर, माला मुरकी
 नें द्योतक खंबर ॥ १७ ॥ वनिता वासीने गढ
 कोट कीधो, पेहेलुं राज तो ऋषजने दीधो ॥ वी
 स पूरव लख कुंअर रहिया, बलता ऋषज रा
 जन कहिया ॥ १८ ॥ सुमंगला सार्थें विवाह की
 धो, सुनंदा दोलो आणीने दीधो ॥ परणी प
 नोती युगलियें जाइ, जरत ब्राह्मीने अष्टाणुं जा
 इ ॥ १९ ॥ बीजी बाहुबल सुंदरी बेटी, जिन जु
 गलियें ते रीत मेटी ॥ त्रेशठ पूरव लख राजमें
 बह्या, पुत्रोने देश वेंचीने लह्या ॥ २० ॥ दान दे
 इने संजम लीधो, बहुली देशमें विहार कीधो ॥

जोला जुगलिया जेदन जाणे, सोनुं रुपूं लेइ
 देवाने आपे ॥ २१ ॥ उनुं अन्न पाणी कोइ
 न आपे, कष्टें अंतरादिक कर्मने कापे ॥ संजमि
 या साथें फल फूल खाये, पोतें गजपुरमां गोच
 री जाये ॥ २२ ॥ श्रेयांस जाती स्मरणज पायो,
 तिणसमे जेठण इत्तु रस लायो ॥ पहेलुं पा
 रणुं तो प्रचुने कराव्युं, पसली मांहे इत्तु रस
 वोहोराव्युं ॥ २३ ॥ प्रथम प्रचु श्रेयांसने तूठा ॥
 साठी वारे कोड सोनैया वूठा ॥ त्यांथी पण चा
 ल्या आदेशर उठी, देशमां केहवराव्युं श्रेयांसें
 तूठी ॥ २४ ॥ तिह्ण शिल्लाने उद्याने आया,
 सांजली बाहुवल त्याहांथी सिधाव्या ॥ परजातें
 वेढो वांदवाने जाय, जूए घणुं पण दरशन न
 थाय ॥ २५ ॥ कानें अंगुलि देइ तेणे साद की
 धो, तुरकें अद्यापि पंथज लीधो ॥ आदिश्वर पू
 रम तालमें आया, कर्म खपावी केवल पाया ॥
 ॥ २६ ॥ चोमुख बेठाने वाजित्र वाजे, तेण स
 मे जरत पाट वधाये ॥ चक्र उपनुं नवनिधि पा
 इ, वेढा अठ्ठाणुं ल्यो दीक्षा जाइ ॥ २७ ॥ बाहु
 बल टुंके तो टेक जणाइ, संजम लीधो तो तिण

सिद्धि पाइ ॥ पुत्र वियोगें मरुदेवा माता. आंखें
 पाडलने बहे आशाता ॥ २८ ॥ नरतने कहे वं
 दण ह्वालो, एकवार देखु तो ऋषज वाल्हो ॥
 कटकनी कोडी ठे नरतनी साथी, मरुदेवा माता
 बेठी ठे हाथी ॥ २९ ॥ पुरिम तालने पांखतीयें आया,
 बाजाना शब्द कानें सुनाया ॥ मरुदेवा पुढेठे
 नरत राजाने, बेटा बाजां ते बाजे कीहां कने
 ॥ ३० ॥ तुमे ऋषजनी रिद्धि न जाणी, अतो हुआ
 ठे केवल नाणी, सेवे सुरनर इंद्र इंद्राणी, बारे
 परखदानीमें रिद्धी जाणी ॥ ३१ ॥ वेठक बावाने ती
 ण गढ थाय, रूपे सोनेने रत्नें जडाय ॥ जाली ऊ
 रूखा पोल पताका, धर्म चक्रर फिरेठे खटका ॥
 ॥ ३२ ॥ मणिमय तोरण अति घणुं दीपे, क
 ल्प वृद्ध ते सुवर्णने जीपे ॥ आठ पुष्करिणी इ
 ति निवारे, पाये लागेठे परखदा बारे ॥ ३३ ॥
 कांटा उद्याने कमल रचाय, वाणी सांजलतां वि
 खवाद जाय ॥ इम सांजली मरुदेवा माता, आं
 ख पाडलने पामे ठे शाता ॥ ३४ ॥ मोहनी मू
 कीने मन पागे लीधो, केवल पामीने सिद्धिवा
 स लीधो ॥ नरत आदेश्वर आगल जाय, रि

द्वि देखीने रलियायत थाय ॥ ३५ ॥ प्रज्जुने पूठे
 वनितानो वासी, ए रिद्धि इणपरें रहेशी के जा
 शी ॥ वलता तीर्थकर तेवीश थाशे, चोवीशमा
 ते मरीची थाशे ॥ ३६ ॥ तुम सरखा चक्रवर्ति
 बारे, वासुदेव प्रतिवासुदेव अठारे ॥ नव बलन
 द्र ने त्रेशठ हुआ, बीजे शास्त्रें संबंध जूजुआ ॥
 ॥ ३७ ॥ पदवि त्रेशठने सरीर साठ, माता त्रेपन
 ने जीव उगुणसाठ ॥ बाप एकावन सहु कोइ
 जाणे, मूरख मन मांहे सदेह आणे ॥ ३८ ॥ म
 रीचि प्रमुखनो संबंध कह्यो, चक्री सांजली हे
 रान थयो ॥ बाप बेटाने वंदण जाय, अहंकारें
 नीच गोत्र बंधाय ॥ ३९ ॥ वांदी पूजिने जरत
 जाय, संघ काढ्यानो उबरंग थाय ॥ शेट्रुंजा के
 रो संघ चलाउं, धर्म ऋषजनो बहुलो हलाउं ॥
 ॥ ४० ॥ ताणी तंबूने तैय्यार कीधा, मुहूर्त जो
 इने मेलाणा दीधा ॥ ठए खंममां फेरी सहराई,
 शत्रुंजय यात्रा आवोरे जाई ॥ ४१ ॥ देशी पर
 देशी अति घणामिलिया, साहमी सघलाए सं
 घमां जिलिया ॥ पुत्र पोतरा कोड सवाइ, पांच
 शेनी नित्य आवे वधाइ ॥ ४२ ॥ लाख चोरा

शी घोडाने हाथी, राजा बत्तीस हजार सुं सा
 थी ॥ आइओ आडंबर अधिक दीवाजे, वाजिं
 न्न निर्घोष सरणाइ वाजे ॥ ४३ ॥ आप ऐराव
 ण असवार ठाजें, मेघामंवर ठत्र बिराजे ॥ ला
 ख चोराशी रथ जोतरिया, पायक ठन्नुंकोड पर
 वरिया ॥ ४४ ॥ पालीताणे ते संघपति आ
 वे, गिरि देखीने मन सुख पावे ॥ सोना रुपाने
 फूलडे वधावे, डुंगर देखीने जावना जावे
 ॥ ४५ ॥ संघ सघलोही चढीओ शत्रुं-जे,
 पहलो रायण रूख तणा पगलानें पूजे ॥ चक्री
 जोइने हुकम दीधो, पगलां पागथी ए प्रासाद
 कीधो ॥ ४६ ॥ रूपानी रांगने सोनाना पाया,
 मणिमय देवल नवां निपायां ॥ धवलां रतन म
 य बिंब नरावे, प्रतिष्ठा पुंडरिकने हाथे करवो
 ॥ ४७ ॥ प्रतिमा पवासण प्रवेश कीधो, ख
 जीनो खरचीने बहु जश लीधो ॥ पुंडरीकने पू
 ठे नरत राजा, शत्रुंजा उपर तीरथ जीहांजां ॥
 ॥ ४८ ॥ नाम कहोने विधि बतावो, प्रदक्षि
 णा देइने संघ साथें आवो ॥ सूरज कुंडमें स्ना
 नज कीजें, जूंगरि जीम कुंमें नरीजें ॥ ४९ ॥

चेलणा तलाइए विसामो लीजें, आदीश्वर पो
 लें उंचा चढीजें ॥ मरुदेवा टुंक मांहे आवीजें,
 चोखा खाणथी वे चार लीजें ॥ ५० ॥ उंचा
 अदनुतने पाये लागीजे, मोक्ष बारीने पो
 लें पेशीजें ॥ केशर घशीने पूजा करीजें, सुक
 त फलना अेम जश लीजें ॥ ५१ ॥ मुर न
 र विद्याधर चक्रवर्ति राणी, प्रतिमाने पूजे उल
 ट आणी ॥ अर्चे चर्चे ने गुण गीत गाय, खेल
 खेलेने खुशियालथाय ॥ ५२ ॥ इणि विधि जात्रा
 करी घरआयो, चक्री मनमां आंनदपायो ॥ पा
 लीनी पाखती पोरवाड चावो, नाम नगोने गाम
 हिमावो ॥ ५३ ॥ पंडित शांति विमलें चारित्र दी
 धो, पढी श्री पूज्ये पन्यास कीधो ॥ धर्मनो ऊ
 द्यम बहुलो तिहां थाय, पाप कर्मते दूर पलाय
 ॥ ५४ ॥ तप गढ नायक श्रीविजयप्रन्न सूरि, गिरू
 ओ गढ नायक पुण्याइ पूरी ॥ कहे विनीत विमल
 कर जोडी, ए नणतां आवे संपत्ति कोडी ॥ ५५ ॥
 ॥ अथ सालनद्र शाहको शिलोका लिख्यते ॥

सरसति माता करीने पसाऊं, पासजीकेरा प्र
 णमुं हुं पाऊ ॥ शालिनद्र शाहनो कहुं शलोको,

लान जाणाने सांजलजो लोको ॥ १ ॥ नगरी रा
 जगृही श्रेणीक राजा, मगध देशनो एक महारा
 जा ॥ रूडी तेहने ठे चेलणा राणी, जगमां जेहनी
 कीरति जाणी ॥ २ ॥ तेह नगरीमां दामें ठे ताजो,
 शेठ गौनद्र मोहोटो मलाजो ॥ चद्रा नामे ठे
 चारिया तेहने, रतां शीलें को जीतें न जेहने ॥ ३ ॥
 देइ मुनिवरने खीरनुं दान, संगम गोवालो
 जाग्य निधान ॥ आवी चद्रानी कुखें अवतरि
 यो, जाणे मुक्ताफल ठीपें संचरियो ॥ ४ ॥
 पूर्ण मासें प्रसव्यो ते पुत्र, सघलुं शोनाव्युं घ
 रनुं सूत्र ॥ अनेक घरनां अख्याणां आवे, वा
 रु मोतीए सहु वधावे ॥ ५ ॥ थोकें थोकें तिहां
 नाटक थाय, माता हियामां हरख न माय ॥ पि
 ता आपे तिहां लाख पसाय, वाचक जनना दा
 रिद्र जाय ॥ ६ ॥ करी ओढव शालिकुमार,
 जनके नाम तिहां धरयुं जयकार ॥ दिन दिन
 चढते वेशें ते दीपें, रुपें जे रतीना नाथने जीपे
 ॥ ७ ॥ बापें परणावी वत्तीस बाला, आपें संज
 म लेइ उजमाला ॥ मोहोतो स्वर्गतां पुण्य पसा
 ये, अवधि प्रयुंजी जोतां उगावे ॥ ८ ॥ पेखी

पुत्रने प्रेमें जरायो, स्नेह पूर्वनो वध्यो न समा
 यो ॥ मोहनो बांध्यो ने मानने भेटी, पिता प
 ठावी तेतीस पेटी ॥ ९ ॥ जोइयें जेह जेह जो
 ग सजाइ, तेतो मौकले सुरते सदाइ ॥ मेवा
 मीठाइ माणिक मोती, एक एकथी अधिक उ
 द्योती ॥ १० ॥ नित्य नित्य नवला नेहें ते पूरे,
 हेतें करीने रहे हजुरे ॥ ओपे मंदिर कुंची पर
 वालें, चिखलमां कस्तुरी वहे जिहां खालें ॥ ११ ॥
 नूपण निर्माल्ये जरायो कूवो, युगति वैजवनी
 नवली ए जूव्यो ॥ जोगी शालजद्र सरिखो
 नूपाटे, नर जोतांशुं नावे को दृष्टें ॥ १२ ॥ ताजी ठ
 कुराइ जाणीने तेहवे, रत्ने कंवलना वेपारी एहवे
 ॥ श्रेणीक राजाने दरबारें आव्या, फेरो पड्यो
 ने कांड नफाव्या ॥ १३ ॥ सघले शहरें ते घर
 घर फिरिया, कंवल कोणे ते हाथे न धरिया ॥ र
 त्त कंवल शोले ते लीये, जद्रा वहुरोने वेंचीने
 दीए ॥ १४ ॥ बीश लाख सोनैया वारु, दीधी
 गिणने तेहने दीदारु ॥ लेइ सोनैया वेपारी व
 लिया, मनना मनोरथ तेहना फलिया ॥ १५ ॥
 चेतना राणीनी चिंता जाणीने, तेडी व्यापारी

कहे तारुणीने ॥ करी संपाडा कंबल काजें, श्रेणिक
 राजा जरी समार्जें ॥ १६ ॥ नृपने व्यापारी
 कहे शिरनामी, शाने संपाडा करोठो स्वामी ॥
 कंबल सोले चद्रायें लीधी, वेगें वीश लाख दी
 नार दीधी ॥ १७ ॥ मनमां विचारयुं श्रेणिक
 महाराजें, वाणीये लीधा व्यापार काजें ॥ एम
 चिंतिने एक मंगावे, खालें नाख्योते खवरज पा
 वे ॥ १८ ॥ वात मेहेलमां तेह वंचाणी, कहे
 राजाने चेलणा राणी ॥ इहां तेडी ते वणिक अनू
 प, जोइयें केहवुंठे तेहनुं रूप ॥ १९ ॥ तुरत म
 हाराजा तेहने तेडावे, जेट लेइने चद्रा तिहां
 आवे ॥ चद्रा आवीने नूपने चाखे, स्वामी सां
 जलो राणीनी साखे ॥ २० ॥ घणुं सुंहालो शा
 लिकुमार, हर्म्यथायें ए काश हजार ॥ न लहे
 रात ने दिवस नूर, किहां उगे किहां आथमेंसू
 र ॥ २१ ॥ निपट नाजुकठे तेह नानडीओ,
 क्यारें केहनी नजरें न पडीयो ॥ ते माटे तुमे
 लाज वधारो. प्रजुजी हमारे मंदिर पधारो ॥
 ॥ २२ ॥ पूरे मावित्र ठोरुनां लाड, स्वामी ते
 मां शो. पाड सपाम ॥ इम सुणिने श्रेणिकरया,

प्रधान साहामुं जोयुं ते ठाय ॥ २३ ॥ अजय
 कुमार तव कहे एम, प्रभु तुम घरे आवशे प्रेम
 ॥ चद्रा नूपने पाय लागीने, सात दिवसनी अ
 वध मांगीने ॥ २४ ॥ शीख लेइने चद्रा सिधा
 वी, रूमी मेहेलनी रचना रचावी ॥ परिकरले
 इने नृप भंजसार, पहोता शालिचद्र शेठने वा
 र ॥ २५ ॥ वेगें आगलथी चाल्या वधाउ, ख
 री नाखे जइ खबर अगाउ ॥ जोपें जिमाडी ह
 रख उपाइ, वारु तेहने दीधी वधाइ ॥ २६ ॥
 मेहेलनी रचना जोतां महाराय, इचरज पां
 मीने मनशुं अकुलाय ॥ अहो अहो हुंशुं अ
 मरापुर आयो, आंतियें नल्योने नेदन पायो ॥
 ॥ २७ ॥ जिम तिम करीने बीजी नूइ जाय,
 त्रिजे माले तो दिग मूढ थाय ॥ जोये उचुंते
 नयणने जोडी, जाणे कै उग्या सूरज कोडी ॥
 ॥ २८ ॥ सहु साथने बेसाडी तिहां, चद्रा जइ
 नाखे पुत्र ठे जिहां ॥ श्रेणिक आव्या ठे मेहे
 ल मजारी, वेगें तिहां आयो तजीने नारी ॥
 ॥ २९ ॥ गेलें गुमानी कहे ते गाजी, मुजने तु
 मे शुं पुगे ठो माजी ॥ श्रेणिक लेइने वखारें

जरो, लाजें लोजें वली दीयो ने बरो ॥ ३० ॥
 तेवार माता कहे न लहे तुं टाणुं, सुतजी श्रे
 णिक नहीं किरियाणुं ॥ मगध देशनो मोहोटो ठे
 राय, आण एहनी लोपी न जाय ॥ ३१ ॥ एह
 वुं सुणीने कुमर आलोचे, सांसें पड्यो ने मन
 मांहे शोचे ॥ माहरे माथे पण जोठे महाराजा,
 तजशुं तो सही जोग ए ताजा ॥ ३२ ॥ एम चिं
 तिने मुजरे ते आयो, नृपने नमीने मेहेल सि
 धायो ॥ जोजन करीने श्रेणिक नूप, क्रोमो घ
 हेणानो जोइने कूप ॥ ३३ ॥ मान गालीनेमं
 दिर गयो, शेठ संजमनो रागीते थयो ॥ नित्यें
 एकेकी परिहरी नारी, प्रेमदा सासुने जइ पुका
 री ॥ ३४ ॥ मानि महिलाना सुणी विलाप, जो
 रे तेणे तिहां दीधा जबाब ॥ रागें रमणीने रे ख
 न खलीयो, जो जो धन्नो हिवे केइ परें मिलीयो
 ॥ ३५ ॥ नामें सुजद्रा धन्ना घरे जाणुं, शालि
 जद्रनी बेन वखाणुं ॥ वेणी स्वामीनी समारे सा
 ही, तेणे अवसरे सांजरयो जाइ ॥ ३६ ॥ आ
 खें आंसुडां आव्यां ते सांसे, पड्यां विठूटी पी
 जुने वांसे ॥ धन्नो देखीने पूठे ते धीर. नयणें

दिवूटां कहो केम नीर ॥ ३७ ॥ दीसे आज तुं
 घणी दिलगीर, शालिजद्र सरखो ताहारे ठे वीर
 ॥ वनिता आठमां मुजने तुं वहाली, चोफेर आं
 सुनी धारो किम चाली ॥ ३८ ॥ बलती बोली
 ते मेली नीसासो, तुमे सांजलो एक तमासो ॥
 आव्यो श्रेणिक तिहांथी निरधारी, बंधव तजे
 ठे एकेकी नारी ॥ ३९ ॥ बत्रीस दहामे बत्रीशे
 तजशी, पगी साधुना पंथने जजशी ॥ लोप करशे
 ते सांजरी वेण, आंख्यो जराणी आंसुयें तेण ॥
 ॥ ४० ॥ धन्नो बोले तव साहसधीर, ताहारे शा
 लिजद्र एकज वीर ॥ तेणे खर खरो ए नहीं खो
 टो, पण तुज बंधव कायर महोटो ॥ ४१ ॥ जै
 रव जांपतो खसती शी जरवी, लेवी दीक्षा तो
 ढील न करवी ॥ एम सुणीने अबला ते जंपे,
 स्वामी कायर ते वाणीये कंपे ॥ ४२ ॥ पण तु
 मे तो सूरापूरा ठो, पग रखे हिवे मांमोजी
 पावो ॥ कामिनी तजवानो कहोवो जो ठाठ, एक
 वारें तो तजोने आठ ॥ ४३ ॥ स्वामी संजम
 नी वात ठे सोहेली, दुकर आदरतां खरी ठे
 दोहेली ॥ गीख देवाने सहु सज्ज थाय, तुमने

बंधुं जो त्रीया तजाय ॥ ४४ ॥ मारे जाइनुं ताणी
 तें पासुं, हलवो पाडवा कीधुं जो हांसु ॥ तोमे
 आठे ने मेली उलाली, वचन म कहेसो कामिनी
 वाहाली ॥ ४५ ॥ पीउजी हसतां में एहवुं ए जा
 ख्युं, तुमे हियामां गांठीने राख्युं ॥ दिल खेंचीने
 वेह न दीजें, अबला जातिनो अंत न लीजें ॥
 ॥ ४६ ॥ तरुणी हसतां शुं तुमे तो कह्युं, पण
 अमे तो साचुं सद्ध्युं ॥ साची बेहेन तुं शालि
 नद्र केरी, फोकट वचन म कहेसो हिवे फेरी ॥
 ॥ ४७ ॥ संजम लेवाने ते सऊ थइ, धन्नो शा
 लिनद्र बोलाव्यो जइ ॥ उठ आलसुं हुं थयो
 आगें, महावीर पासें जइ महाव्रत मांगें ॥
 ॥ ४८ ॥ धन्नो शालिनद्र संजम धारी, थया वि
 पयनी वासना वारी ॥ नद्रा पुत्रने वोहोरावी रली
 या, बहुयर लेइने मंदिर बलियां ॥ ४९ ॥ वीर
 साथें ते देश विदेशें, विचरे वैरागी साधु सुवेषें
 ॥ तप करीने दुर्बल तने, वारे वरपने अंते ते
 बने ॥ ५० ॥ आव्या राजगृही नयरी ऊद्याने,
 मास उपवासी बधते वाने ॥ आहारने काजें वी
 र आदेसैं, पहोता नद्राने तेह निवेशें ॥ ५१ ॥

आंगण आव्या पण उलख्या नाही, ततक्षण
 पाग वलीने उगहीं ॥ बीजी वारना पहीता ते
 वारें, तो पण केणे न उलख्या नारें ॥ ५२ ॥
 पाग वलीने वहेगे वाटें, मिली महीयारी माये
 लेइ ते माटें ॥ दहीं वोहोरीने तेहने हाथे, मुनिव
 र विमासे ते मन साथें ॥ ५३ ॥ वचन वीरनुं अ
 लिक न थाय, जोआ जगती फेरी मंडायामहारी
 माताने वाऊणी जाणो, आज मिले ठे एह उखाणो
 ॥ जिननी पासें जइ पूढे ते जेहवे, वीरें आगलथी
 बोलाव्या तेहवे ॥ सुणो शालिजद्र साधु तुमारी,
 मात पूरवनी एह महीयारी ॥ ५५ ॥ एवुं सांचलतां
 आव्यो वैराग, अणसण लेवानो थयो तिहां राग ॥
 गिरि वैचारें गुरूने आदेशें, लेइ अणसण पाले
 विशेषें ॥ ५६ ॥ आवी नद्रा तिहां आंसूडांऊरती,
 विध विध जांतिना विलाप करती ॥ साथें ली
 धी ठे बहुयर सघली, दुःखें टलीठे तेहनी डगली
 ॥ ५७ ॥ शिळा ऊपरें देखी संथारो, नयणे वि
 बूटी नीरनी धारो ॥ नद्रा जाखेठे पुत्र हुं चूंडी
 हिये शूनीने दुःखनीबुं हुंडी ॥ ५८ ॥ सुत पेटनुं
 पापणीयें सही, आंगण आव्यो पण उलख्या

नहीं ॥ हा हा मुजने ए पड्यो वरांसो, सारी
 अवतार रहेशे ए सांसो ॥ ५९ ॥ हाहा हाथे में
 आहार न दीधो, आव्यो अवसर अफलज
 कीधो ॥ नद्रा पुत्रने एवं त्यां जाखें, काई वीसा
 रया अवगुण पाखें ॥ ६० ॥ तुज विना तो सुना
 आवास, अमने थायेठे घडी बमास ॥ हसी बो
 ले जो वचन विचार, अमने सही तो थाये करा
 र ॥ ६१ ॥ माता जाणीने जूओ जो साहमुं, पुत्र
 तेवारे हुं संतोष पामुं ॥ शालिनद्रने धन्नो वारे
 ठे, एतो आपणने पापें नरेठे ॥ ६२ ॥ साहमुं
 जोशो तो अवतार करशो, पडशो फंदमां पाठा
 जो फिरशो ॥ दिलशुं माताने दिलगीर देखी,
 साधु धन्नानी शिख उवेखी ॥ ६३ ॥ जोयुं शा
 लिनद्रे आख उघाडी, त्यारें रलीयायत थईने मां
 डी ॥ अंशुक वडे ते आंसुडां लोहोती, वंदी बहु
 अरशुं मंदिर पहोती ॥ ६४ ॥ धन्नो पाधरो मुग
 तें गयो, एक अवतारी शालिनद्र थयो ॥ पहो
 तो सर्वार्थ सिद्ध विमाने, सेवक स्वामी पणुं
 नही जे थाने ॥ ६५ ॥ संवत सतराशें सितरे
 वरशें, भिंगसर शुदीतेरशें हरपें ॥ उदयरत्न कहे

आद्रज मांहे, एह शिलोको गायो ऊढाहे ॥ ६६ ॥

अथ श्रीनेमिनाथ जीको शिलोको लिख्यते

॥ सिद्धि बुद्धि दाता ब्रह्मानी बेटी, बाल
कुंआरी विद्यानी पेटी ॥ हंसवाहनी जगमां वि
ख्याता, अक्षर आपोने सरसती माता ॥ १ ॥
नेमजी केरो केशुं शिलोको, एक मनथी सांजल
जो लोको ॥ जंबुद्वीपना नरतमां जाणुं, नगर
सौरीपुर सरग समाणुं ॥ २ ॥ चवुटा चोराशी
बारे दरवाजा, राज्य करे तिहां यदुवंशी राजा ॥
समुद्र विजयघर शेवादेवी राणी, शयिलें सीताने
रूपें इंद्राणी ॥ ३ ॥ तेह तणी जे कुखें अवतरी
या, सहस अठोत्तर लक्षणें नरिया ॥ खारो खा
टोने मीठो जे आहार, गर्जने हेंतें कीधो परिहा
र ॥ ४ ॥ घोर घटाए जलधर गाजे, सजल
लीलांबर पुहवी विराजे ॥ वादल दलमांहे बीज
ऊवूके, क्षणक्षण अंतरमेह टवूके ॥ ५ ॥ पूरण
नदीयें आव्याठे पूर, पूरण पुहवी पसरयो
अंकूर ॥ ऋतु मनोहर दादुर टहके, नरयां
सरोवर लेहेरें ते लहके ॥ ६ ॥ उबी हरियांनी

अजब ठवीली, नीले आचरणे धरती रंगी
 ली ॥ राग मल्हारनी ऋतु जलेरी, अजुआ
 ली पांचम श्रावणकेरी ॥ ७ ॥ पूरण पसरयो व
 र्णाकाल, पूरण पुहवी पसरयो सुगाल ॥ मध्य
 रातने पूरण मासें, नेमजी जनम्या राज आवा
 सें ॥ ८ ॥ चौशठ इंद्रने वपन्न कुमारी, ओढव
 करीने गया निज ठारी ॥ थयो परजात रात वि
 हाई, दासीये जईने दीधी वधाई ॥ ९ ॥ दूर ते
 कीधुं दासी आचरण, अनेक आप्यां वस्त्र आ
 चरण ॥ सोवन थालनी माहे रूपैया, सवालाख
 ते आप्या सोनैया ॥ १० ॥ अति आनंद पाम्यो
 नरेश, राजसज्जामां कीधो प्रवेश ॥ पुत्र जन्म्या
 नी नोवत वाजी, नादें ते रह्युं अंबर गाजी ॥
 ॥ ११ ॥ वत्तीश वद्धा तिहां नाटिक थाय, घर
 घर कुंकुम हाता देवाय ॥ दान याचकने दीधां
 अठेह, जाणे के वुठा उत्तर मेह ॥ १२ ॥ तोरण
 बांध्यां घर घरवार, घर घर थाये मंगला चार ॥
 बारे दिवस लगें ओढव कीधो, लखमी तणो
 त्यां लाहोज लीधो ॥ १३ ॥ अरथ गरथना ख
 रच्या जंडार, नाम ते राख्युं नेम कुमार ॥ दिन

दिन बाधे चंद्र बढ़ितो, केडने लंके केशरी
 जीत्यो ॥ १४ ॥ त्रिवली देखीने त्रिजुवन मोहे,
 गंगा जमुनाने सरसति सोहे ॥ नासा निरूपम
 दीपशि खाशी, नयण पंकज पत्र प्रकाशी ॥ १५ ॥
 मुखसुं बोले अमीरस वाणी, मन मांहे हरखे
 शिवादेवी राणी ॥ बाल लीलामां बुद्धि झंडार,
 देखीने मोहे सुर नर नार ॥ १६ ॥ एक दिन
 नेमजी बाजार मांहे, नगरीना ख्याल जूवे उठा
 हे ॥ कृष्ण तणी जिहां आयुध शाला, तिहां क
 णे पोहोता दीन दयाला ॥ १७ ॥ शंख चक्र ने
 धनुष्य उदार, कोदंड ताणीने कीधो टंकार ॥ व
 लता सेवक इणीपरें बोले, गोविंद विना ए च
 क्र न डोले ॥ १८ ॥ टंची आंगुलियें चक्र उ
 पाडयुं, चाक तणी परें जलुं जमाडयुं ॥ अर्चक
 उजा इणी परें जांखे, शंख न वाजे कृष्णजी पां
 खे ॥ १९ ॥ हलवेशुं लेई शंख बजायो, सह पा
 तालें सरगें सुणायो ॥ शेष सलसलीयो धरा
 तिहां धमकी, जरूखें बेठी कामनी जवकी ॥ २० ॥
 हबक लागीने हार तिहां त्रूटया, कंचूक तणा बं
 द विबूटया ॥ समुद्र जल हलीया चढिया कल्लो

लें, कायर कंपेने डुंगरा डोले ॥ २१ ॥ हाथी ह
 बक्या ने जबक्या जुंजार, तेजी त्राठाने डरघो
 दिगपाल ॥ पवन थंज्यो ने धरती घेराई, कृष्ण
 जी कहे सुणो बलनद्र जाई ॥ २२ ॥ कोईक न
 घो ते वेरी अवतरीयो, महोठो बलवंत मन्नरं
 जरियो ॥ नादे अनहद अंबर गाजे, एहवो शंख
 ते केणे न वाजे ॥ २३ ॥ त्रिचुवन मांहे तो कोई
 न सूजे, चक्री बारे ने इंद्र अलूजे ॥ जदुनाथ
 ने थई ते जाण, वात सुणी ने थया हैराण ॥ २४ ॥
 धूजे नूधर चिंते मनमांय, राज काज ते मेल्या
 कहेवाय ॥ सुगुण सोजागी साहासिक शूरो, ए
 के वांते ए नहीं अधूरो ॥ २५ ॥ मुळथी बलियो
 ए महाबलधारी, मोटे सांसे ते पड्यो मुरारी ॥
 वली वली मनमां चिंते वनमाली, राज्य अमा
 रू लेशे उलाली ॥ २६ ॥ इणे अवसरें नेम कु
 मार, मलपता आव्या सत्ता मजार ॥ आघा आ
 वोजी आदर दीधो, सत्ता सहु कोई परणाम कीधो
 ॥ २७ ॥ पाणी पसारी शारंग पाणी, मुहथी बोल्यो ते
 एहवी बाणी ॥ आज परखीयें बल तुमारो, नेम
 न मावो हाथ अमारो ॥ २८ ॥ काचीकांब जि

म कणयर केरी, कमल तणी परें वाल्यो कर फे
री ॥ नेमजी रह्या बांहे पसारी, जाणे हींडोले
हींचे गिरधारी ॥ २९ ॥ कृष्णजी मनमांजूए वि
चारी, एह कुंवारी बाल ब्रह्मचारी ॥ इम चिंति
ने नारी हकारी, ठांटे नेमने बांहे पसारी ॥ ३० ॥
नरी खंडो खली केशर कुंकुमे, गोपी दीयरशुं
रामत रमे ॥ सत्यनामाने रुक्मिणी राणी, कहे
नेमने एहवी ते वाणी ॥ ३१ ॥ परणो राजुल
रूपें रढीआली, नारी विना ते नर कहियें हाली
॥ नारीनो रसते मोटो संसार, नारी ते अठे
नरनो आधार ॥ ३२ ॥ पुरुषनी पासें जो न हो
य नारी, वस्तु न धीरे कोइ व्यापारी ॥ नारी
ते अठे रतननी खाण, घरणी वडेते घरनुं मंडा
ण ॥ ३३ ॥ मुसकीशुं बोले गोविंद राणी, बत्ती
स सहस्समां बडीजे ठाणी ॥ पायें पम्बुं ते दोहे
लुं जाणी, ते माटे तुमे न्हानी देराणी ॥ ३४ ॥
जेहशुं अपूरव प्रीत बंधाणी, आजते हिंवे केम
रहियें ताणी ॥ फिरी उत्तर नेमे न दीधो, मान्यो मा
न्योजी सह्य कोणे कीधो ॥ ३५ ॥ बोल बोल्या
ने कीधी सगाइ, लीधां लगन ने करी सजाइ ॥

ठपन्न कुल कोडी जादवमिलिया, तूरने नादें स
 मुद्र जल हलीयां ॥ ३६ ॥ चढी जानने वाजिंत्र
 वाजे, जाणे आपाढो जलधर गाजे ॥ जुगतें क
 रीने जादव चढीया, प्रथम घावतो नगारें पडी
 या ॥ ३७ ॥ मथगल माताने परवतकाला, ला
 ख बेतालीस सबल सुढाला ॥ गकें ठक्याने मंदें
 जरंता, मूके सारसी चाले मलपंता ॥ ३८ ॥ ला
 ख बेतालीस तेजी पाखरीया, उपर असवार
 सोहे केसरीया ॥ अढी कढी ने पंच कल्याणा,
 पूठें पोढाने पुरुष समाणा ॥ ३९ ॥ समगतें चा
 ले ने चक्र रहंता, चंचल चपलने चरणे नाचं
 ता ॥ साज सोनेरी सोहे केकाणा, लाख बेता
 लीस वाजे निशाणा ॥ ४० ॥ लाख बेतालीसर
 थ जोतरीया, कोडी अडतालीस पाला परवरि
 या ॥ नेजा पंचरंगी पंच क्रोड जाणुं, अढीलाख
 ते दीवीधर वखाणुं ॥ ४१ ॥ सोहे राजेंद्र शो
 ले हजार, एकशो ऐशी बली सांथे सूहार ॥ सा
 थें सेजवालां पंचलाख वारु, मांहे सुंदरी बेठी
 दीदारु ॥ ४२ ॥ शेठ सेनापति साथें परधान,
 नली जांतशुं चाली हिवे जान ॥ बंदुकनी धू

रे सूर ठियायो, रज डंवरेँ अंबर ठायो ॥ ४३ ॥
 धवल मंगल गाये जानरणी, जाणे सरसतीनी
 वीणा रणजणी ॥ वागे केशरीये वरघोडे चढिया,
 काने कुंडल हीरे ते जडीया ॥ ४४ ॥ उत्र चामर
 मुकुट बिराजे, रूप देखीने रतिपति लाजे ॥ जान
 लेईने जादव सिधाव्या, उग्रसेनने तोरणे आव्या ॥
 देखी राजुल मनमां उल्लसे, चंदर देखी जेम
 समुद्र उधसे ॥ घणा दीवसनी राजुल तरसी,
 सजी शिणगार जूए आरसी ॥ ४५ ॥ अंजन अं
 जीत आंखे अणीआली, वेणी सरली ने सांपण
 काली ॥ शीस फूलने सेथें सिंदूर, मयण राजा
 नुं पसरयुं ठे पूर ॥ ४६ ॥ गालें गोरीने जाल
 ऊबूके, मदजर माती ने नजर नै चूके ॥ नासा
 निर्मल अधर परवाली, केडे थोडीने घणी सुकु
 माली ॥ ४७ ॥ नूपण नूपीत सुंदर रूप, मुख
 पूनम चंद अनुपा ॥ रूडा रूपाला कुच उत्तंग, क
 सणे कसीने कीधा ठे तंग ॥ ४८ ॥ द्विये लाखी
 णो नवसर हार, चरणे जांजर रणऊणकार ॥ सजी
 शिणगार उजी जरूखे, निरखी नेम ने मनमाहे
 हरखे ॥ ४९ ॥ मोटा मंडपनी रचना अति रूडी,

गाजे वाजिंत्र उठले गुडी ॥ जुंगल जेरीने वाजे
 नफेरी, जुअरे राजुल नेमने हेरी ॥ ५१ ॥ गोखें
 चढीने राजु न चांखे, दोवस दोहोला गया तुम
 पांखे ॥ कंत तें कांई कामण कीधुं, मन माहखूं उ
 लाली लीधुं ॥ ५२ ॥ आज फरके वे जिमणुरे
 अंग, सहीए थाशे रंगमां जंग ॥ कहे राजुल
 सुणो साहेलो, रखे जादव जाए मुज मेली ॥
 ॥ ५३ ॥ पशु पेखीने पायो वैराग, मुगति रमणी
 शुं कीधोवे राग ॥ नेमजी पूरवनी प्रीत पालीजें,
 इम ठटकीने वेह नदीजें ॥ ५४ ॥ मुगति मंदिरमां
 आवजो मिलशुं, सदा सरवदा रामतरमशुं ॥ दान
 संवळरी जिनवरें दीधुं, नेम राजुलें संजम लीधुं
 ॥ ५५ ॥ पूरवनी प्रीत अविहड पाली, पोहोता
 मुगतिमां करम प्रजाली ॥ वेगें विरहनी वेदनाटाली,
 शिव मंदिरमां जाजो संजाली ॥ ५६ ॥ शीलपाले
 जे चतुर सुजाण, नामे तेहने कोड कल्याण ॥ उद
 यरत्न कावे इणीपरें बोले, कोई न आवे श्री नेमने
 तोलें ॥ ६७ ॥ ईति ॥ ॥

अथ श्री पार्श्वनाथजीको शिलोको लिख्यते
 मात जुवनेश्वरी जुवनमां साची, जेहनी ज

गतमां कीरति जाची ॥ देवी पदमावती धरें
 द्र राणी, आपो शुन मति सेवक जाणी ॥ १ ॥
 पार्श्व शंखेश्वर केरो शिलोको, मन धरीने सांजल
 जो लोको ॥ देश वढीयारमांहे जे कडो, कलि
 कालमांहे जालम प्रगट्यो ॥ २ ॥ जरासंधने
 जादव वढीया, बांधी मोरचा दल बेहु लडिया ॥
 पडे सुजटने फाजु मुरडाय, कायर केतां तिहां
 नाशीने जाय ॥ ३ ॥ राग सिंधुर्ये सरणाइ वा
 जे, सुणी सुजटने शूरातन जागे ॥ थाये जुद्धने
 कोई न थाके, त्यारें जरासंध ठल एक ताके ॥
 ॥४॥ ठपन्न कुल क्रोडी जादव कहियें, एक एकथी
 चढीयाता लहीयें ॥ प्राण आपें पण पावा न जागे,
 एक मारे तो एकवीश जागे ॥ ५ ॥ लढतां एहनो
 अंत न आवे, करूं कपट तो रामतफावे ॥ इम
 चिंतिने मेली तिहां जरा, ढलियुं जादवनुं सैन्य
 तिहां धरा, ॥ ६ ॥ जरा लागीने जादव तिहां
 ढलिया, नेम कृष्णने बलजद्र बलिया ॥ त्रण पुरु
 षने जरा न लागी, कहे नेमने कृष्ण पाय लागी
 ॥ ७ ॥ एहवो कोईक करो उपाय, जेणे जराते नाशी
 ने जाय ॥ कहे कृष्णने नेम कुमार, करो आठम

तप चोविहार ॥ ७ ॥ पहेलां धरणेंद्र तुमे उपा
 सो, तेहने देरासरें देव ठे पासो ॥ तेह आरा
 धो आपशे बिंब, सरसे आपणुं काम अविलंब
 ॥ ९ ॥ मुखथी मोटो बोल न जाखुं, त्रण दिव
 स लगें सैन्य हुं राखुं ॥ जिनवर जक्तिनो प्रजा
 व जारी, थाशे सघलि विध मंगलकारी ॥ १० ॥
 इंद्रें सारथि मातुलि नामें, मेल्यो जिनवरनी ज
 क्तिने कामे ॥ आसन मांडीने देव मुरारी, आ
 डम करीने बेठा तिणे ठारी ॥ ११ ॥ तूठो धरणें
 द्र आपे श्री पास, हररूया श्रीपति अति उल्हा
 स ॥ नमण करीने ढांटे तिणवार, उठ्युं सैन्य
 ने थयो जयकार ॥ १२ ॥ देखी जादवनो जाल
 म जोरो, जरासंधनो त्रूटयो तिहां तोरो ॥ त्यारें
 लेईने चक्र ते मेल्युं, वंदे कृष्णने आवी ते पेहे
 लुं ॥ १३ ॥ पढी कृष्णना हाथमां बेठुं, जरासंधने
 शाल तो पेठुं ॥ कृष्णें चक्र ते मेल्युं तिहां फेरी,
 जरासंधने नाख्यो ते घेरी ॥ १४ ॥ शीश ठेद्युं ने
 धरणी ते ढलीओ, जयजय शब्द ते सघलें उ
 ठलिओ ॥ देव दुंदुजि आकाशें वाजे, उपर फू
 लनी वृष्टि बिराजे ॥ १५ ॥ तुमे वासुदेव त्रण

खंड जोक्ता, कीधा धर्मना मारग मुगता ॥ नय
 र शंखेश्वर वास्युं उमंगें, थापी पार्श्वनी प्रतिमा
 श्रीरंगें ॥ १६ ॥ शत्रु जितीने सोरठदेश, द्वारि
 का नगरीमां कृष्ण नरेश ॥ पाले राज्यने टाले
 अन्याय, ह्वायक समकित धारी कहेवाय ॥ १७ ॥
 पार्श्व शंखेश्वर प्रगट मल्ल, अवनिमांहे तुं एक अ
 वल्ल ॥ नाम ताहरूं जे मनमांहे धारे, तेहना सं
 कट दूर निवारे ॥ १८ ॥ देशी परदेशी संघ जे
 आवे, पूजा करीने जावना जावे ॥ सोना रूपा
 नीं अंगी रचावे, नृत्य करीने केसर चढावे ॥
 ॥ १९ ॥ एक मनें जे तुमने आराधे, मनना म
 नोरथ सघला ते साधे ॥ तोरा जगतमां अब
 दात मोटा, खरो तुंहींज बीजा सहु खोटा ॥
 ॥ २० ॥ प्रतिमा सुंदर शोहे पुराणी, चंद्र प्रज्ञने
 चारें जराणी ॥ घणे सुरनरे पूज्या तुज पाय ॥
 तेहने मुगतिना दीधा पसाय ॥ २१ ॥ ओगण
 शाठने उपर शत वरसैं, वइशाख वादि ठठने
 दिवसैं ॥ एह शिलोको हरखे में गायो, मुख पायो ने
 दुरगति पलायो ॥ २२ ॥ नित्य नित्य नवली
 संगल माला, दिन दिन दीजें दोलत रसाला

॥ उदय रत्न कहे पास पसार्ये, कोडि कल्या
ण सन्मुख थार्ये ॥ २३ ॥ इति ॥

अथ श्री सत्रुंजा तीर्थको शिलोको लिख्यते

॥ सरसति माता हुं तुज पाय लागुं, कहेवा
शिलोको वरदान मार्गुं ॥ जेहवा शास्त्रमां सुणी
या परिमाण, तेवा सिद्धगिरिना करूं वखाण ॥
॥ १ ॥ प्रथम जिनवर पुंडरीक आगें, निसुणी
जविजन श्रुतपुट जागे ॥ नहीं कोई इण युग श
त्रुंजा तोले, अनंत जिनवर इणपरें बोले ॥ २ ॥
ग्रहगण मांहे वडो जिम चंद, पर्वत मांहे तिम एह
गिरिंद ॥ सुर नर दानव मिल्या ठे कोड, सेवा
करेठे बे कर जोड ॥ ३ ॥ जरत सगरें उद्धार
कीधा. साधु अनंता इणे गिरि सीधा ॥ देस
देसना संघ बहु आवे, माणक मोती लेइने
वधावे ॥ ४ ॥ आरज देसमां श्रावक सार, दर्श
न करीने सफल अवतार ॥ काग कूकनो नावे
अवतार, केतो इण मुखें करूं विस्तार ॥ ५ ॥
सदा ए गिरि शाश्वतो सार, एना गुणनो कोई न
लाने पार ॥ इणीपरें निसुणी श्रीगुरु वाणी,
श्रावक हंरख्या ठे उलट आणी ॥ ६ ॥ देशमां

सोहे श्री कब्बदेश, सदा परिघल लक्ष्मी निवेश ॥
 दक्षिण दिशिंयें समुद्र तीर, नदीया बहुलीने
 खलंके ठे नीर ॥ ७ ॥ तेह देशमां कोमाय गाम,
 जाणीयें अजिनव स्वर्गनुं धाम ॥ देहरा उपास
 रा दीसेठे चंग, करे श्रावक नित्य बहुरंग ॥ ८ ॥
 न्याति मांहे शोहे उसवाल, मानसमां जेम उ
 पे मराल ॥ शाह रायमल कुल अधिक मंडाण ॥
 उपनो करमसी शाह पचाण ॥ ९ ॥ माणक पूंजो
 बे दीसे वरवीर, देशल पेथोठे साहस धीर ॥
 मालसी पांचो ते दीसे गुणखाण, खेतसी करमसी
 कीधा परिआण ॥ १० ॥ एहवा श्रावक दीपता
 दक्ष, पक्षमांहे जेम शुकलपक्ष ॥ मेली कुंकोतरी
 मोरत लीधो, तिलक संघपतिनो पंचाणने कीधो
 ॥ ११ ॥ संघ चाल्यो ने कारज सीधो, प्रथम
 मेलाण मुंदरे जइ दीधो ॥ अदनुत अनोपम
 मिलयो ठे साथ, साह्यहूआ श्री शीतलनाथ ॥
 ॥ १२ ॥ बेसी जिहाजे नवीनपुर आया, देहरा
 देखीने आनंद पाया ॥ देवजुवन ते रमणीकस्था
 न. जाणीयें अजिनव नलिन विमान ॥ १३ ॥
 रायसी वर्द्धमान कीधा प्रासाद. उंचा करेठे ग

गनयी वाद ॥ बावन्न जिनालय देहरा शोहे,
 देव दानव किन्नर मोहे ॥ १४ ॥ पेसता वामां
 गें चौमुख दीपे, तेजे करीने दिणयर दीपे ॥
 सहस फणोने श्री शांतिनाथ, मूल गंजारे त्रि
 चुवन नाथ ॥ १५ ॥ चाल्यो संघ हिवे सोरठ दे
 श, पंच रतन जिहां कीधो निवेश ॥ तीरथ त
 टिनी तोय सुदारा, तांबुल रिद्धिने अतिहि वि
 स्तारा ॥ १६ ॥ जाड बीडना गुब्बज गहके, जा
 ई जूइने परिमल महके ॥ दाडिम कदलीने वृ
 क्ष सहकार, वनस्पति शोनेबे नार अठार ॥
 ॥ १७ ॥ रेवत गिरिने सहु शिर नामी, जिहां
 बेठा बे नेमनाथ स्वामी ॥ कर्म खपावी केवलपद
 पाया, राजुल नेमजी मुक्त सिधाया ॥ १८ ॥ ति
 हांथी संघ हिवे आनंद पामी, आव्या जिहां बे
 श्री शत्रुंजा स्वामी ॥ गिरि देखीने हरख बहुपा
 या, सोना रूपानें फूलडे वधाया ॥ १९ ॥ धन
 धन दाहाडो ते आजनी दीशे, सहु हरख्या बे
 विश्वाज वीशे ॥ आवी उतरीया पादलिप्त स्थान,
 ठाकर उनमजी दीये बहु मान ॥ २० ॥ पाली
 ताणुं नगर ते अत्यंत दीपे, तेजें करीने

अलकानें जीपें ॥ चटुटा चोवटा दीसे अपार,
 ब्रव्यतणो कोइ लाजे नही पार ॥ २१ ॥ वरण
 अठार वसे सदाइ, दुःख दोहग नही कदाइ ॥
 किहांकणे व्यापारी रुपैया पटाये, किहांतो जवे
 हरी जवेर वटावे ॥ २२ ॥ दोसी शेठने कंदोइ
 सार, एहवी सोजे ठे रुडी बजार ॥ गढमढ मंदि
 र पोहोल प्रकार, लांघो पोहोलो जोयण विसता
 र ॥ २३ ॥ यात्रा करवाने श्री संघ चडीया, पे
 हेलो सेलर वाव्ये जइ मिलीया ॥ पाणीमां दी
 से ठे अति तरंग, निर्मल नीरवहे घणु गंग ॥
 ॥ २४ ॥ देव जूमिका आश्रम कीधो, संघे ति
 हां कणे विसामो लीधो ॥ गीत गानने करता
 विनोद, पगला देखीने उपनो मोद ॥ २५ ॥
 शालिकुंडनुं निर्मल नीर, जेह दीठाथी उपनी धी
 र ॥ जल पीठाथी विकशें ठे नाण, अज्ञान ना
 शिने आवे ठे ज्ञान ॥ २६ ॥ हमो हिंगलाज कु
 मारकुंड, जवजल तारण दीसे तरंग ॥ जेना ज
 लसंगे कर्म खपावे, मोक्ष पुरीयें वहेलो पोहो
 चावे ॥ २७ ॥ जूषणकुंरु शाह जूषणे कीधो,
 धन खरचीनें लाहोज लीधो ॥ पासे रमणीक

रुडो आराम, देव दानवने रमवानो ठाम ॥
 ॥ २८ ॥ आगे चालतां रामपोल आवी, वाघन
 पोल ते सघलाने जावी ॥ स्वर्ग द्वारनो बांधव
 दीसे, जोतां संघनो हियडो हीसे ॥ २९ ॥ पासें
 बेठावे गौमुख यक्ष, सेवा करेवे जेहनी दक्ष ॥
 संच सान्निध्य चक्रेसरी देवी, सदा तीरथ रखवाल
 करेवी ॥ ३० ॥ मूल नायक श्री ऋषज जिणंद,
 तेजें जलहल कोमी दिणंद ॥ वंश इस्वांग म
 रूदेवा नंद, नानिराया कुल पूनमचंद ॥ ३१ ॥
 पद्मासन बेठा प्रजु योग ध्यान, धनुष्य पांचशें
 सोवन वान ॥ सत्तर जेदी तिहां पूजा जणावी,
 जावना श्री संघे जलीपरें जावी ॥ ३२ ॥ स्नात्र
 महोत्सव अति बहु रंग, जेरि जूंगल वाजे मृदंग ॥
 नोबत निशान जांजरसाद, रणजण रणके घंटना
 नाद ॥ ३३ ॥ अगर केदुना महकेबे धूप, गजे
 ठकुराइ त्रिजुवन रूप ॥ पुठे जामंडल अति ते
 ज गजें, देवाधिदेव ते एहवा विराजे ॥ ३४ ॥
 नाटक नृत्य सदा उठरंगे, जावना जावी मनने
 अनंगे ॥ इणीपरें प्रजुजीना दरिशाण कीधा,
 द्रव्य खरचीने बहु जश लीधा ॥ ३५ ॥ सूर्यकुं

रु ते उग्योठे सूर, तिणमांहे विची ते उठे जर
 पूर ॥ कीधे स्नान वाधे घणु नूर, कर्म थाय ठे
 सवि चक चूर ॥ ३६ ॥ सहस्रकूट ते नयणे निर
 खी, थै थै कार करे देव हरखी ॥ सारे प्रचुनी
 अहनिश सेव, पूजा नक्ति करे नित्य मेव ॥ ३७ ॥
 प्रथम गणधर श्री पुंमरीक, पन्निम श्री गौतम नही
 अलीक ॥ पगला तेहना दीठे धन्य धन्य, गणधर
 जेठया चवदेशें बावन्न ॥ ३८ ॥ प्रजाते उठी जो नाम
 जलीजे, वंभित कारज तो सवि सीजे ॥ तिन देवें
 जिहां कीधो निवास, एहवा गौतमजी पूरजो आ
 स ॥ ३९ ॥ रायण तरुतलें आदि जिणेंद, पग
 ला पूजो देखी नवि वृंद ॥ जेहना पूजनथी स
 वि सिद्धि थाय, कर्म खपावीनें मोक्ष सिधाय ॥
 ॥ ४० ॥ पासें रमणिक अष्टापद देहरो, बावन
 जिनालय शोने शिर सेहरो ॥ रावण समकित ति
 हां कणे पाम्यो, गंठी जेदीने मिथ्यात्व वाम्यो ॥
 ॥ ४१ ॥ प्राची वायव्यदिशि पश्चिम उत्तर, दोय
 चार आठ दश तीरथंकर ॥ प्रचुने पूगीनें देह
 रा कराव्या, जरत चक्रीसरें बिंब जराव्या ॥
 ॥ ४२ ॥ अदचुत देखीनें अचरज आवे, दरि

शन करीनें सह सुख पावे ॥ धन्य धन्य प्रचुनोमो
 टो ठे गात्र, एहवा जिननी करीये जात्र ॥ ४३ ॥
 ॥ कुंड खोडीयार सदा जलजरीयो, लहेरां दीएवे
 अलिवन दरीओ ॥ मीन कल्लब जलचर वंश,
 जेहने सेवेवे सर्वदा हंस ॥ ४४ ॥ द्रव्य खरच्या
 ठे जेहमां लक्त, प्रासाद रचीयांठे दीठा प्रत्यक्त ॥
 एहमां नही कांड खलखंच, तेहमां थाप्यां ठे पां
 डव पंच ॥ ४५ ॥ चतुमुख शिवा सोमजीये क
 राव्यो, जेने युगायुग नाम रखायो ॥ उठी प्रजा
 तें दरिशन कीजें, मुक्ति रमणीनें वेगें वरीजें ॥
 ॥ ४६ ॥ टूके बेठाठे मरुदेवी माता, जेना दरि
 शणथी होय सुखशाता ॥ कर्मतोडीने सिद्धिसो
 पान, चडी पाम्याठे मुक्ति निदान ॥ ४७ ॥ फि
 रती चोफेर देहरा केडे, देतां प्रदक्षिणा कर्मनें
 फेडे ॥ देई प्रदक्षिणा बाहेर आया, सर्वे संघ
 ना कारज सारया ॥ ४८ ॥ वाणी सुणीनें चक्रीयें
 जराव्या, मणिमय पांचशें धनुष्यनी काया ॥ गु
 फा पश्चिम दिशियें ठे जिहां, बिंब मणिमय नं
 रया तिहां ॥ ५१ ॥ देवता तेहनी सेवाये आवे,
 पूजा करीनें जावना जावे ॥ देव करावे प्रचुनें

अंगोल, नमण आवे ते ओलखा जोल ॥ ५० ॥
 चंदन तलावडी शीतलबाया, जिणमां लोटे थाय
 सुकोमल काया ॥ अशुज नामना कर्म खपावे,
 तिहारथी सहु संघ सिद्ध वर आवे ॥ ५१ ॥ नदी
 सत्रुंजी न्हावाने जाय, स्नान करीनें पावन थाय ॥
 तीर्थ नूमिका स्वढज जाणी, प्राची वाहनी न
 दीय वखाणी ॥ ५२ ॥ तीर्थ यात्रादि धर्मनी कर
 णी, नवजल पयोधि पार उतरणी ॥ अनुक्रमे
 पामे ते गुणतणी श्रेणी, मुक्तिमंदिरनी जे ठे नि
 सरणी ॥ ५३ ॥ संघपतिये धर्मना कारज कीधां,
 जाट जोजकनें बहु दान दीधां ॥ धन्य श्रावक द
 या प्रतिपाल, संघपति कंठे ठवी वरमाल ॥ ५४ ॥
 देहरा देहरानुं पार न जाणु, जिन पद्मिमा त्यां
 केती वखाणुं ॥ इणीपरें सुजस नीशान बजाइ,
 आव्या गिरनारें हर्ष वधाइ ॥ ५५ ॥ जादववं
 श शेवादेवी नंद, बाल ब्रह्मचारी नेम जिणंद
 ॥ तेहनी यात्रा कीधी बहु जाव, जईने प्रणम्या
 माता अंबाय ॥ ५६ ॥ मृगराज देखी गज दूर
 पलाय, शंखध्वनी सुणी पन्नग जाय ॥ तेम गि
 रि सेवनथी पातक बूटे, अष्टकर्मना बंधन तूटे

॥ ५७ ॥ बहरी पालीनें यात्रा जे करशे, मुक्ति रम
 णीनी लीला ते वरशे ॥ नाण दरिसण चारित्रने
 पावे, मोह सप्तक वहेलो खपावे ॥ ५८ ॥ संवत
 अठारे चौथीशे वरपे, यात्रा कीधीगे मनने हर
 पे ॥ शुदि पूनम चैत्रज मास, सदा गोडीचो
 पूरजो आस ॥ ५९ ॥ संघ सर्वे तिहां हरष धर
 आवे, सीरा लापसी करीने जिमावे ॥ साधु सा
 ध्वीने दीयेगे दान, गोरडी गायेगे बहुगीत गान
 ॥ ६० ॥ कवि संघपतिने देइ आशीष, अविचल
 तुमतणी होजो जगीश ॥ नहीं कोइ जैनमां इण
 गिरि तोले, मुने देवचंद्र इणीपरें बोले ॥ ६१ ॥
 ॥ अथ श्री नरत बाहुबलको शिलोको लिख्यते ॥

प्रथम प्रणमुं माता ब्रम्हाणी, तूठी आपे जे
 अविरल वाणी ॥ नरत बाहुबल जाइ संजोडे,
 कहेशुं शिलोको मनने कोडे ॥ १ ॥ नाजीरा
 जानें कुलें नगीनो, प्रथम तीर्थकर ऋषज उ
 पनो ॥ सो पुत्र तेहना समरथ जाणुं, नरत बा
 हुबल जला वखाणुं ॥ २ ॥ आयुध शालायें च
 क्र उपनुं, मनते हरखीउ नरत नूपनुं ॥ चक्र
 पूजीने करी चढाइ, दीधा मेराते जंगलमां

जाइ ॥ ३ ॥ सैन्य लेइने सबल दीयार्जे, विवि
 ध जात तिहां रणभूर वाजे ॥ चक्र अतुल
 बल आकाशें हाले. जरत सैन्यशुं पुंठे ते चा
 ले ॥ ४ ॥ पूरव आदिने उत्तर अंते, आ
 ण मनावी चक्री बलवंतें ॥ साध्या षट खंड क
 मल अपार, वरश ते बोलयां साठहजार ॥ ५ ॥
 गंगा सिंधुने साधी सरिता, पणी मलेठना देश
 ते जीत्या ॥ सेना लेइने जरत सिधाव्या, साधी
 षटखंड अयोध्यायें आव्या ॥ ६ ॥ नगरीनां लो
 क सामांते आवे, मोतीयें थाल जरीने वधावे ॥
 वाजे वाजिंत्र जूंगल जेरी, शेरीयें फूलमां नाखें
 वेरी ॥ ७ ॥ याचकजन तो कीरति बोले, कोइ
 न आवे श्री जरतने तोले ॥ दिन दिन दोलत
 वाधे सवाई, बीजानी नहिं तेवी अधिकाइं ॥ ८ ॥
 अनक्रमें कीधो नगर प्रवेश, चक्रनो ओढव मां
 डयो नरेश ॥ चक्र ते रह्युं आकाशे जमे, आ
 युध शालायें आवे नहीं किमे ॥ ९ ॥ सहु मि
 लीने मनमां विमासे. शा माटे रह्युं चक्र आका
 शें ॥ सुणो साहिव कहे सेनानी. जाइ तुमारो
 एक गुमानी ॥ १० ॥ बाहुबल नामें महा बल

धारी, तेह न माने आण तुमारी ॥ हठ मांडीने
 रह्यो हठीलो, ठत्रपति ठोगालो ठेल ठवीलो ॥
 ॥ ११ ॥ अवलोने ए महा अजिमानी, सेवा कीधी
 ठे साधु समानी ॥ अजित अतुल बल तेणे ते ब
 लियो, जालम जोद्धोने संग्रामें कलीयो ॥ १२ ॥
 अनमी ते केहनी आण न माने, पराक्रमे पुरो
 ते प्रजाने पाले ॥ एहवी ते सुणी वात अदचू
 त, लेख लिखीने मोकल्यो दूत ॥ १३ ॥ दूत ते
 हवे जरत आदेशें, वेगें ते पोहोतो बाहुबल दे
 शें ॥ कागल आपीने कहे करजोडी, वेगे तेढ्या
 ठे चालो तुमे दोडी ॥ १४ ॥ कागल वांचीने
 चढ्यो ते क्रोध, दूत प्रत्यें कहे वचन विरोध ॥
 कोण जरत जे तेडे ठे हमने, नही उलखतो
 पूतुं तुमने ॥ १५ ॥ दूत कहे ठे जाइ तुमारो,
 जरत चक्रवर्ति साहेब हमारो ॥ आयुध शाला
 यें चक्र न आवे, तेणे करीने तुमने बोलावे ॥
 ॥ १६ ॥ करी असवारी वेगें सिधावो, तिहां आ
 वीने शीस नमावो ॥ नावो तो करो युद्ध सजाइ,
 मांहो माहे मिली समजो वे जाइ ॥ १७ ॥ जर
 त चक्रवर्ति षट खंड जोगी, अजिमान सहनां

रह्यो आरोगी ॥ ते आगलशुं गजुं नुमारुं, ते
 घाटे कहु मानो हमारुं ॥ १८ ॥ इमनिसुणी
 ने बाहुबल जपे, मुऊ आगें तो त्रिजुवन कंपें ॥
 चढ्यो क्रोधने दंतज करडे, होठ करमे ने मूढ
 ज मरडे ॥ १९ ॥ एहवो ते कोण चूलो छ मारी,
 जेह तडो वडी करे हमारी ॥ कहे बाहुबल चढा
 वी रीस, करुं युद्ध पण न नामुं शीस ॥ २० ॥ वे
 गो खीजीने दूत ते वलिओ, अनुक्रमें जरतने
 आवी ते मिलिओ ॥ जरतने जइ दूतते जाखें,
 आण न माने कटकाइ पाखें ॥ २१ ॥ सुणी वा
 तने मानी ते साची, चडाइ करवाने जेरी ते वा
 जी ॥ हाथी घोडाने रथ नीशाण, लाख चोरा
 शी तेहनुं परिमाण ॥ २२ ॥ रथ लेइने शस्त्रे
 ते जरियां, धवला धोरीडा धिंग जोतरिया ॥
 साथें ठन्नुं कोड पाला परवरिया, नेजा पंचरं
 गी दशकोड धरिया ॥ २३ ॥ पूरा पांच लाख
 दीवीधर नार, महीपति मुगटाला बत्तीस हजा
 र ॥ शेष तुरंगम कोड अठार, साथें व्यापारी सं
 ख न पार ॥ २४ ॥ सवाकोरु ते साथे परधान,
 मोटी नालनुं तेरे लाख मान ॥ साथें रसोइ

आ सहस्र बत्रीश, लशकर लेईने नरत चक्री
 श ॥ २५ ॥ लशकर लेईने चक्रवर्ति चढीन,
 साहमो आवीने बाहुबल अडिन ॥ तेना कटक
 नो पारन जाणुं, यम रूपी ते योद्धा वखाणुं ॥
 ॥ २६ ॥ निशाणें घाव देई परवरीयो, सैन्य
 लेईने साहामो उतरियो ॥ कहे बाहुबल नरत
 ने जइ. ताहरी तो शुद्ध शा माटे गई ॥ २७ ॥
 सगा जाइ शुं एम न कीजें, रिद्धि पामीने बेह
 न दीजे ॥ जाते दाहाडे जोने विमासी, पर पो
 तानो न होवे सहवासी ॥ २८ ॥ अंग विना ते
 माग न वाजे, जाडुतें राखी जीड न जांजे ॥
 घर नवशें पुत्र पीयारे, सुख न लहियें नूत हि
 यारे ॥ २९ ॥ तें तो अवगण्या जाइ अष्टाणुं,
 यति थया ठे तजी ते आणु ॥ तांते लोनीयो
 तुजने विचारी, तेणे तें लीधुं संजम जारी ॥ ३० ॥
 ताहरे पापें ते नाशीने बूटा, घणुं अघटतुं की
 धुं तें जूठा ॥ करतुक ताहरां केहेतां हुं लाजु,
 मुऊ वडे तुं षट खंड गाजुं ॥ ३१ ॥ तुऊने जो
 उ नजरे जो फेरी, वार न लागे नाखतां वेरी ॥
 फूल दमो लेई कोमल हाथें, वढवुं सोहेलुं चूडा

ली साथें ॥ ३२ ॥ ए नहीं एहवा ठाकम ठो
 ला, चाहे चित्तथी जूल मजोला ॥ हाक मारूं
 तो पर्वत फाटे, लाज राखुं ठुं बंधव माटे ॥ ३३ ॥
 टंची आंगलीयें मेरुने तोलुं, ताहरो कटक लेइ
 समुद्रमां बोलुं ॥ पण राखुं ठुं लाज पितानी, वा
 त वली कहुं बालपणानी ॥ ३४ ॥ गगने उठा
 ल्यो गिंदुक रीते, पावो पडतो तुं धरयो में प्री
 तें ॥ चरणे जालीने फेरव्यो तुजने, पवने जिम
 फेरे देउलध्वजने ॥ ३५ ॥ वली फेरव्यो पाव
 क वनमें, जिम नलराजाने जूवट जगमें ॥ बा
 लपणांने रूडां संजारी, गर्व ते करजो पगी वि
 चारी ॥ ३६ ॥ नरत सांजलजे साचुं हुं जांखुं,
 हिवे केहनी लाज न राखुं ॥ बालपणानी रमत
 नाठी, हिवे बांधी ठे बकरी काठी ॥ ३७ ॥ एम
 कहीने रणवट रसीयो, धनुष्य लेइने साहमो ते
 धसीयो ॥ उमटयो धूमाडो प्रगटी जाल, बाहु
 बलें तिहां जाली करवाल ॥ ३८ ॥ बांधी हथी
 यार साहमो ते आव्यो, प्रथमतुंकारें नरत बो
 लाव्यो ॥ कांड हणावे सुजटनी घाटा, आपणे
 कीजें युद्ध बे काटा ॥ ३९ ॥ कोइ, बीजानुं इहां

नहीं काम, फोकट बीजानां फोडो का ठाम ॥ च
 ठीयें आपणे अवधज राखी, सुरनर कोडी क
 रया तिहां साखी ॥४०॥ बेहुने शरीरे रह्या बेहु
 पासा, तिहां सुरनर जोवे तमासा ॥ नरत बाहु
 बल अधिक दीवाजे, बेहुने शिर वत्र मुकुट बि
 राजे ॥ ४१ ॥ नरत बाहुबल साहामां बे जाइ,
 शशि रवि सरिखा रहे थिर थाइ ॥ निरखी सुर
 नर रहे सह्य अलगा, दृष्टि युद्धमां प्रथमज वलगा
 ॥ ४२ ॥ नयणाशुं नयणां मेलीने जूए, नरतनी
 आंखें आंसुं ते चूए ॥ जिम जादरवे जलधर
 धारा, जाणे के चूटा मोतीना हारा ॥ ४३ ॥ हा
 रयो नरतने बाहुबल जींत्यो, त्रिजुवन मांहे थ
 यो वदितो ॥ बोले बाहुबल बंधव प्रीतें, बीजुं
 युद्ध कीजें शास्त्रनी रीतें ॥ ४४ ॥ नर हरि नाद
 नरतें तिहां कीधो, शब्दते सघले थयो प्रसि
 द्धो ॥ रणनी जूमि लगें रह्यो ते गाजी, गयवर
 गह गह्या हण हय्या वाजी ॥ ४५ ॥ गड यड
 गाजे बाहुबल वेगें, हरिनाद कीधो तिहां तेगें ॥
 दशो दिशा पूरी नादने वंदें, त्रिजुवन कंपे तेह
 ने वंदें ॥ ४६ ॥ समुद्र जल हलकल्लोलें चडिया.

जाणे त्रिजुवन एकठा मिलियां ॥ हाथी हलहलि
 या हयवर हणहणिया, नाद सुनीने सुरनर रण
 ऊणीया ॥ ४७ ॥ जीम जुवन थयुं ते जिहारें,
 ज़रत विमासे मनमांहे तिहारें ॥ एह अतुली
 बल महाबल पूरो, एह समो वन बीजो नहीं शूरो
 ॥ ४८ ॥ जाते दाहाडे देशवटो देशे, रिद्धि अ
 मारी उलाली लेशे ॥ ज़रतने मुंडे ढली तिहांशा
 इ, बोले बाहुबल सांचलो जाइ ॥ ४९ ॥ जुजा
 युद्ध कीजें हिवे ज़ारी, अमे नमावुं बांह तुमारी ॥
 इम सुणीने ज़रत ज़ूनाथ, वेगें पसारघो पोतानो
 हाथ ॥ ५० ॥ बाहु बलवंतो जुजबल बांह, पट
 खंम पृथवी जाले उठाह ॥ कमल तणी परें बा
 हुबल वाले, तस जुज न बल्यो ज़रत ज़ूपालें ॥
 ॥ ५१ ॥ वारू हिया मांहे मत राखो बांकी, चो
 थुं मुष्टि युद्ध कीजे हिवे ताकी ॥ महोकम मू
 ठी तव ज़रतें उपानी, बाहुबल माथें दीधी पठा
 डी ॥ ५२ ॥ मूठीने मारें शिथिल थयुं अंग,
 ज़रतना मनमां वाध्यो उबरंग ॥ बाहुबले मन
 साथें विचारी, मुठी उपाडी हियामां मारी ॥ ५३ ॥
 मूठीने मारें ज़रत लडथमीठ, ज़मरी खाई ने

चूयें ते पडिउ ॥ चढी रीशने मूठ चम चमे, जेम
 दुहाणो विषधर धम धमे ॥ ५४ ॥ ठामें थई
 नरतें हाथ उपाडयो, मारी मूठने चूयें तें पा
 ड्यो ॥ ढीचण लगें घाल्यो धरति मांहीं, जाणे
 आरोप्यो खीलो जगमांहीं ॥ ५५ ॥ सुरतें उ
 ठ्यो ते आप संजाली, नरतने रीशे मारयो दं
 ड उलाली ॥ घाल्यो धरतीमां कंठ प्रमाण, का
 यर कंपे ने पड्युं जंगाण ॥ ५६ ॥ चक्रीनुं सै
 न्य थयुं ते जांखुं, नरत विमासे जागळे वांकुं ॥
 बाहुबल कटकें वाजिंत्र वाजे, वीतशोका थई
 सुजट विराजे ॥ ५७ ॥ उठ्यो नरत ते धरा धं
 धोली, क्रोधें ते रह्यो चक्रने तोली ॥ नरत च
 क्रने आगन्या आपी, बाहुबल माथुं तुं लावजे
 कापी ॥ ५८ ॥ बाहुबल मनमां एम विमासे,
 धीग बोलीने पढी विमासे ॥ कुखें कां आव्यो नरत
 ए पापी. न्यायनी रीततो नाखी उथापी ॥ ५९ ॥
 मूठी तोलीने रह्यो ते जेहवे, जल हल चक्र
 पण आव्युं ते तेहवें ॥ वेगें वलियो ते वंदीने
 पाय. गोत्रमैं चक्र न चाले कयांय ॥ ६० ॥ चढ्युं
 कलंक चिंते ईम चक्री, मुळथी न्हानो पण मोटो

ए चक्रो ॥ जरत रह्या हिवे हाथ खंबेरी, एहनी
 मूठीनी गत अनेरी ॥ ६१ ॥ दीन हीणो जरत
 ने जाणी, बाहुबल बोले ते एहवी वाणी ॥ जर
 त न मारुं जाई सलूणो, मानव माथुं ते कोइ
 मधूणो ॥ ६२ ॥ मूठिनो मनमां आणी आलो
 च, मस्तकें लेइ कीधो ते लोच ॥ बाहुबल थ
 यो ते साध वैरागी, सुर नर पूजे पाय ते लागी
 ॥ ६३ ॥ देव दुंदुनि वाजी आकाशें, फूलनी
 वृष्टी थइ चिहुं पाशें ॥ मनथी मेली विषय वि
 कार, धन धन जंपे सुर नर नार ॥ ६४ ॥ क
 र्म खपावी केवल पाम्युं, लघु जाईने शिस न ना
 म्युं ॥ काजसग्न करी कर्म निकंदुं, पठी जइने
 जिनवर वंदुं ॥ ६५ ॥ इम धारी मनमां काज
 सग्न रहे, वर्षा कालें ते कर्मने दहे ॥ कुंजर च
 ढी केवल किम लहियें, बेनने वचने बुज्यो ते
 हिये ॥ ६६ ॥ पगजपाडयो केवल पाम्युं, जई
 ने जिनवर मस्तक नाम्युं ॥ जाइ नवाणुं एक
 ठा मिलिया, मन मनोरथ सघला ते फलिया ॥
 ॥ ६७ ॥ एक वर्ष लगे काजसग्न रह्या, वाचा
 पालीने मृगते ते गया ॥ उदय रतन कहे वचन

विलास, बाहुबल नामें लील विलास ॥६८॥ इति॥

॥ अथ विवेक विलासनो शिलोको लिख्यते ॥

सरसती माता तुज पाये लागु, देव गुरु त
णी आगन्या मागु ॥ काया नग्रीनो कहु सिलो
को, एक चीत्तथी सांजलजो लोको ॥ १ ॥ नग
री अनोपम अती घणी सारी, मांही वसे ठे
मोटा वेपारी ॥ दस दीवान चतुर सुजाण तेनां
नामनां करूं वखाण ॥ २ ॥ पान आपान उदा
न कहीए, समानव्यान पांचमो लहीए ॥ नाग
धनंजय देवदत्त कहा, कुरकल कुरमदश ए
थयां ॥ ३ ॥ पांच इंद्रिओ खासा परधान, मन
बळ वचनबळ कायाबळ जाण, सासोसास
ने आवुखुं लहिए, ए दशे प्राण कायामां कहीए
॥ ४ ॥ पांच पटोधर बुद्धिना जारी, नगरीनी
शोचा वधारेसारी, कायामांहीठे तत्वने प्राण,
ओळखी लेजो चतुर सुजाण ॥ ५ ॥ जळ पृथ्वी
ने वायु आकाश, पांचमो कहीए तेज आजाश ॥
नीश दीन जली चाकरी करे, खावंदनी आणा
शीरपर धरे ॥ ६ ॥ एकेका साथे जमादार पांच,
खाए नहीं ते कोइनी लांच, लोही कफ पीत विर

જ કહીએ, પરશેવો પાંચે જઠનાં લહીએ ॥ ૭ ॥
 હિવે પૃથવીના કહુ તે ધારો, શ્રોતા સાંજઠી દી
 લમાં ઉતારો, ચામ હામ ને માંસ રૂંચાટા, નસો
 એ પાંચે જુજુવા સાંટા ॥ ૮ ॥ ડંઘ આઠસ તર
 પાને જુલ, કાંતી એ પાંચ માણે ઠે સુલ, એ પાંચ
 આણાં તેનીજ ધરે, નીશદીન ચાકરી વરાવર ક
 રે ॥ ૯ ॥ બઠ પ્રસન્ન ધાય નિશ્ચલ કહે ઠે, સં
 કોચણ વાયુ હુકમમાં રહે ઠે, સાચ જુઠ મોહ લો
 જ અહંકાર, એ પાંચે કહ્યા આકાસર સાર ॥ ૧૦ ॥
 નગરીનો ધણી સોહમજી સાલ્વી, મન રાજાને
 જ્યારે આપી ॥ મનબુદ્ધિ ચીત્ત અહંકાર ચારે, જેઠા
 બેશીને મનસુવો ધારે ॥ ૧૧ ॥ પચરંગી વંગલો
 દશ દરવાજા, રાજ્ય કરે ઠે ત્યાં મન રાજા, બહુ
 બલીયો જેનું જોર ઠે જારી, તેથી રહ્યા ઇંદ્રાદિક
 હારી ॥ ૧૨ ॥ દેવ દાનવનું કાંઈ નવિ ચાલે,
 મોટા મુઠાલા હામ ન ઘાલે; એવો જોરાવર જા
 લમ કહીએ, જેના પ્રાક્રમનો પાર ન લહીએ ॥
 ॥ ૧૩ ॥ બેટા બેટીયા વિસ્તાર જારી, મન રાજા
 ને ઘર દો નારી; પાટ ઠકુરાલી પરવરતી કહીએ,
 જેનું ચરિત્ર તો ત્રણ લોકે લહીએ ॥ ૧૪ ॥ જે

ना प्राक्रमथी राजा लोनाय, अणुमानीतीने में
हेले नवि जाय; अणुमानीतीनुं नारे ठे काम,
नीरवरती राणी जेनुं ठे नाम ॥ १५ ॥ परवर
ती साथे राजा रमे ठे, नीशदीन राणी मनमां
गमे ठे; राणी ने नजी राजाथी माया, एम कर
ता पांच दीकरा जाया ॥ १६ ॥ ते उपर एक बेटी
त्यां जाणी, ठ फरजन जण्या परवरती राणी ॥ पांच
पुत्रने राजा परणावे, एकेकी कन्या मन गमती ला
वे ॥ १७ ॥ पांच बेटाना कहुतुं नाम, बहु बळी
या जेनुं जोरावर काम; वमेरो बेटो मोहज क
हीयें, कामने क्रोध तिसरो लहीयें ॥ १८ ॥ लो
न मान ए पांचेरे नाइ, आशा वेहेनी ए ठनी स
गाइ ॥ मोह राजाने कुमतिनारी, पांच बेटाने बे
टी एक सारी ॥ १९ ॥ अचेत अज्ञान शोकने
धोख, परद्रोही पांचे नाइनो थोक ॥ मिथ्या ना
में ते कुंअरी जाणी, ठएनी माता कुमति राणी
॥ २० ॥ काम नानेरो मोहनो नाइ, रति स्त्री
थी कीधी सगाइ ॥ पांच बेटा पण रतिने थया,
मद मडर ने उन्माद कहा ॥ २१ ॥ चोथो दी
करो अंधक लहीयें, हिंसा पांचमो नाइ ते कही

यें ॥ विषया बेटी पांचेनी बेहेनी, लाज न राखे
 जगतमा केनी ॥ २२ ॥ त्रीजो नानेरो लाफक वा
 यो, क्रोध प्रवृत्ति कुखेंथी जायो ॥ हिंसा नारी
 तो तेने परणावे, पांच बेटाने बेटी एक थावे ॥
 ॥ २३ ॥ कुवचन अहंकार ममताने इरखा, री
 शालो जाइ पांचे ए सरखा, अदया नामेंते
 पांचेनी बेहेनी, दया न आपे जगतमां केनी ॥
 ॥ २४ ॥ चोथो लोभते जगत विख्यातो, तृष्णा
 नारीथी फिरे नित मातो ॥ पांच बेटा ते तृष्णा
 ने थाय, लालच चाहने प्राह कहेवाय ॥ २५ ॥
 अचेन स्वारथ माडीना जाया, ममता बेहेनीथी
 सरवेनें माया ॥ मान पांचमो नानेरो जाइ, न
 र्मावती साथें कीधी सगाइ ॥ २६ ॥ पाखंड
 परपंच अशुद्ध धूत, कुबुद्धि पांचे जाइनो ए
 जूद्ध, ठठी दीकरी नर्मणा माही, नर्मावती रा
 णी कुखेंथी जाइ ॥ २७ ॥ बेटाने घर बेटा त्यां
 कीधा, सरवाले तीस एकठा लीधा, पट दी
 करी बहुवारू पांच, जीती न शके आपी कोइ
 लांच ॥ २८ ॥ एकताळीस जणनुं हेतज एहवुं,
 सरवे जगतने वखाण्या जेहवुं ॥ राणी परवरती स

રવેને જોતી, કુંવરી આશાઢે પીયર પનોતી ॥
 ॥ ૨૯ ॥ કુંવરી વિચારે ધન્ય મુજ અવતાર, પાં
 ચ જાઈને ઘર વિસ્તાર ॥ ત્રણ જગતમાં મ
 હારી વડાઈ, મહા બલિયા યોદ્ધા મહારા ઢે જા
 ઇ ॥ ૩૦ ॥ પચીશ જતીજા જગતમાં માહારે, તે
 આગલ કોઈનું જોર ન ચાલે ॥ જાજીવ પાંચ
 પરિવલ જાકું, પાંચ જતીજી કામ ઢે કાજુ ॥
 ॥ ૩૧ ॥ એતો પરિવાર કહ્યો જલેરો, હિવે સા
 જલો નિવૃત્તિ કેરો ॥ એક દિન રાજા તત્પર થ
 યા, અણમાનીતિના મેહેલેં ત્યાં ગયા ॥ ૩૨ ॥
 દેહી સુંદરી પામ્યા વિશ્રામ, આતો ઠરવાનું દી
 સેઢે ઠામ ॥ એવું જાણીને તિહાજ રહ્યા, નિવૃ
 ત્તિને પણ દીકરા થયા ॥ ૩૩ ॥ પાંચ દીકરા
 ઉપર બેટી, જેવી રતનની જરેલી પેટી ॥ દાન પુ
 ણ્યને ધરમના તાજા, પ્રથમ હુવા વિવેક રાજા
 ॥ ૩૪ ॥ શુજ શીલને સંતોષ કહીયેં, પાંચમો
 જાઈ વૈરાગ્ય લહીયેં ॥ અણઆશા નામેં બેટી
 સવાઈ, જેહના મહાબલિયા સમરથ જાઈ ॥ ૩૫ ॥
 જે કોઈ અણઆશા કુંવરીને વરિયા, તે તો જ
 વસાગર ક્ષણમાંહે તરીયા ॥ આશા ઘાંડીને અ

एआशा आणे, ते तो अक्षय पद मेहेलमां
 माणे ॥ ३६ ॥ जेहना जाइवनी आबरू आ
 खी, सासरवा सामां राखे नहीं बाकी ॥ सरवे
 रीजीने एहवुंज आपे, जन्म मरणनुं संकट का
 पे ॥ ३७ ॥ कुंवरी अणआशा पीयर पनोती,
 पतिव्रता धर्म पाले निज सती ॥ तेहना पीय
 रना कहुं तुं नाम, श्रोता सांजलजो थइ साव
 धान ॥ ३८ ॥ विवेक राजाने सुमति ठे राणी,
 जेहनी वार्ता शास्त्रें वखाणी ॥ पांच दीकरा प्र
 सव्या सारा, मुखथी बोले ते अमृत धारा ॥
 ॥ ३९ ॥ पहेलो ज्ञानने परकाश बीजो, सचि
 त्त कुंवर जन्म्यो ठे त्रीजो ॥ जाव नीति ए पां
 च प्रमाणो, श्रद्धा कुंवरी ठठी ए जाणो ॥ ४० ॥
 बीजो कुंवर विचार कहीयें, सुबुद्धि राणी पार न
 लहीयें ॥ जेहनी कुखे ते पांच जण थया, अक
 ल अकाम उदास कह्या ॥ ४१ ॥ शुचि सुकृत
 पांच ए जाइ, जुगती नामें तो कुंवरी जाइ ॥
 त्रीजो कुंवर शील ठे डाह्यो, क्षमा राणीने पा
 ले बंधायो ॥ ४२ ॥ विनय सहन दयाने मुनि,
 गंजीर गरज राखे नहीं कोनी ॥ दीनता नामें

कुंवरी डाही, जेहना बहुगुणी पांचे ठे जाइ ॥
 ॥ ४३ ॥ चोथो कुंवर संतोष जेहने, शांति ना
 में तो राणी ठे तेहने ॥ पांच कुंवर राणीयें जा
 या, त्रण जगतमां न जाये वाह्या ॥ ४४ ॥ स
 त्य धीरज ने विश्वास कहीयें, चोथो निःसंदेह
 कुंवर लहीयें ॥ पांचमो कुंवर करूणावंत जाणुं,
 सुखी नामें तो कुंवरी वखाणुं ॥ ४५ ॥ वैराग्य
 न्हानो पांचमो जाइ, शोना शीकहुं वरणी न
 जाइ ॥ जेनी कीरति त्रिलोके जाणी, विद्या स
 रखीतो जेने घर राणी ॥ ४६ ॥ शम दम संज
 मसुं रामत जेहनी, विरक्त उदास वातठे ते
 हनी ॥ सरसती कुंवरी गुण बहु कह्या, जेनी कृ
 पाथी पूर्वघर थया ॥ ४७ ॥ ए सहु परिवार
 निवृत्ति केरो, स्त्री पुरुषनो रंग नलेरो ॥ एहवुं
 कुटुंब कहावे जेहने, पारंगत थावे वारशी तेहने
 ॥ ४८ ॥ निवृत्ति केरो सरवालो कीधो, एक ता
 लीस जणनो लेखोज लीधो ॥ तिश पुरुषने इ
 गीआर नारी, सांजली वातने राखो विचारी ॥
 ॥ ४९ ॥ बेहु शोक्योनो विस्तार जाणुं, कुंवर
 कुंवरीउं सरखी वखाणुं ॥ एकतालीस दूनो व्या

सी कहेवाय, बेहुनो परिवार एटलो थाय ॥५०॥
 बन्ने शोक्योने तीसरो राजा, सुख जोगवे रहे
 नित्य ताजा ॥ पंचाशी जण जगतमां कहेवे,
 काया नगरीमां एकठा रहेवे ॥ ५१ ॥ एक दि
 न बेहु शोकें कीधी लडाइ. मेहेलो बंधाइ सा
 म सामी जाइ ॥ प्रवृत्ति कुटुंब एक पासें थयुं,
 निवृत्ति कुटुंब मुकामें रह्युं ॥ ५२ ॥ बांध्या मो
 रचा लडवाने सारू, कीधी सामग्री गोलाने दा
 रू ॥ सहुना दादाजी मनज कहा, प्रवृत्ति पुत्र
 नी संघाते गया ॥ ५३ ॥ सहुनो इष्ट वे आत
 माराम, साक्षी रहीने जुवेवे काम ॥ आतमारा
 में दीलमां इम धार्युं, घरडे बुझापण कीधुंवे
 खारू ॥ ५४ ॥ मानेतिकेरे वशज थयो, मा
 टे कुंवरनी संघाते गयो ॥ एवं ना घटे घरडाने
 करवुं, अणमानीतिना कुंवरथी वडवुं ॥ ५५ ॥
 माटे आपणे तिहां नहीं जावुं ॥ अणमानीति
 ना कुंवर तरफ थावुं ॥ विवेक सैन्यने धीरज
 आपी, लडाइ करवी मुकर थापी ॥ ५६ ॥ तु
 मारी तरफ हमे रहीशुं, मन राजाथी युद्ध क
 रीशुं ॥ निवृत्ति सुत तत्पर थया, हथीयार लेइ

मोरचे गया ॥ ५७ ॥ रण संग्राम रोप्योढे जा
 इ, केवी थाय ठे जुवो लमाइ ॥ मानीतीकेरी
 तरफ मनज चमीया, ततद्धण आवी मोरचे अ
 डीया ॥ ५८ ॥ विवेक विचार उजाढे जाइ, आ
 तमारामें कीधी चडाइ ॥ चमी मोरचा आगल
 आवे. तोफो नाला ने बंदुका लावे ॥ ५९ ॥ म
 न महा बलीयो ओधो कहेवाय, जेहनो ताप तो
 नवि सहेवाय ॥ मन राजायें तोफ हलावी, आ
 तमाराम उपर चलावी ॥ ६० ॥ बुटे गोळाने न
 डका थाय, कायर केरा तो ठरे नहीं पाय ॥ जा
 लां बरणीने कवाण तीर, जालवी ले ठे आतमा
 वीर ॥ ६१ ॥ खड्ग खंजरना घाव करे ठे, आत
 माराम पटे रमे ठे ॥ घोव खपुवाने कटारा घाव,
 आतमाराम जालवे दाव ॥ ६२ ॥ पाढेरो जइ
 आगेरो आवे, आतमा उपर घाव चलावे ॥ न
 वागे तीर न वागे गोली, फिरीथी आव्यो बर
 णीज तोली ॥ ६३ ॥ नहीं मूकुं हिवे एम वदेढे,
 आतमाराम खडखड हसे ठे ॥ थाक्यो मनराजा
 घावज करी, पाढो गयो तिहां मोरचे फरी ॥
 ॥ ६४ ॥ करे विचार हिवे केम थासे, आतमा

राम केम जीताशे ॥ महारा जोरथी कोइ नवि
 रह्या, मोहे टा मूगला उडाने गया ॥ ६५ ॥ दे
 व दाएव सरखाने हणुं, इंद्रादिक केरो नार न
 गणुं ॥ कही कने कीधा धूलज जेला, आज शुं
 थयुं आर्वीके मवेला ॥ ६६ ॥ मन जाणे जे पा
 गो केमजागुं, महारा जोरने खांपण लाग्युं ॥ त
 तक्षण तिहाथी घोडो चलाव्यो, आतमाराम न
 जीक आव्यो ॥ ६७ ॥ उपरा उपर करेवे घाव,
 कांइ नवि चाले मननो दाव ॥ आतमाराम धी
 रज लावी, ज्ञाननी गुपतीतिहां चलावी ॥ ६८ ॥
 क्षमा खंजिरनो घाव तिवां कीधो, थयो घायल
 पकमीने लीधो ॥ अवले मुसके बांधे जेम चोर,
 मननुं तिहां चाले नही जोर ॥ ६९ ॥ बहु जो
 रावर जोधो वश कीधो, जीतनो डंको नगारे
 दीधो ॥ एवं जोइने थर थरी गती, प्रवृत्ति सु
 तनी आंख तिहां फाटी ॥ ७० ॥ महाबलि
 यो मोह चडियो ठे त्यांहि, जापट कुण जीले
 त्रिलोकमांहि ॥ आणी कोरथी विवेक चडिया,
 बन्ने आर्वीने मोरचें अडीया ॥ ७१ ॥ घणुं घ
 मशान चाली लडाइ, सामासामी त्याहां आफले

जाइ ॥ स्त्रीयें स्त्रीने बेटीयें बेटी, पहेरयां बखत
 र जुलम पेटी ॥ ७२ ॥ सामा सामी तिहां क
 डाका थाय, जुद्धनो वरणन कह्यो नविजाय ॥ अ
 न्यो अन्यथी बलिया बहु शूर, जेवुं सायरनुं च
 डतो पूर ॥ ७३ ॥ साहमा सामी त्याहां प्रगट्युं ठे
 वेर, जैम पवनने सागरनी लहेर ॥ मिथ्या सा
 चने थाय लमाइ, शोकना सामो जाव वमाइ
 ॥ ७४ ॥ ज्ञानना सामो अज्ञान आवे, सुमति
 कुमतिने पागी हठावे ॥ अचेत चेतना सामो
 अडे ठे, धोख प्रकाश सामो जिडेठे ॥ ७५ ॥ स
 मऊ द्रोहने हठावे जीहां, काम विचार आफले
 तिहां ॥ जुक्तिना सामी विषया कहेवाय, सुकृ
 त सामो मद चमी आय ॥ ७६ ॥ मढर सामो
 लाज तिहां कहिये, हिंसाना सामो संजम लहि
 यें ॥ अंधक करतां अकलजी बलिया, अकाम
 जाइयें उन्माद बलिया ॥ ७७ ॥ क्षमा हिंसा
 ने पागे हठावे, शीयल क्रोधने बांधीने लावे ॥
 दया निर्दयने हठावे जटमां, मुनि कुवचन उता
 रे घटमां ॥ ७८ ॥ अहंकार माफी विनयथी मां
 गे, रीश सहनने पाय त्याहां लागे ॥ द्रोही सुमता

ની આગલ નવિચાલે, ગંજીર ઇપ્પાને કેદમાં
 ઘાલે ॥ ૭૯ ॥ સંતોષ આગલ નહીં ઉપાય, લો
 ન બાપડો નાશીને જાય ॥ અન્નિમાનનું ચાલે
 નહીં કિશું, ઉદાસ આગલ જાણવો પશુ ॥ ૮૦ ॥
 વિરક્ત આગલ ધુરક્તના વાંક, વૈરાગ આગ
 લ દંનકજી રાંક ॥ વાણી સારતાં નર્મણા ક
 હેનો, શમદમ આગલ પરપંચ શાનો ॥ ૮૧ ॥
 ન્યાય આગલ નહીં પાશ્વં નારે, શુદ્ધ આગલ
 અશુદ્ધ હારે ॥ સાચ જૂઠને સદાય વૈર, જૂઠ હા
 રે તો મંગલિક ઘર ॥ ૮૨ ॥ કુંવરી અણઆશા
 જોરાવર નારી, તે આગલઆશા રહીબે હારી ॥
 કેટલો કહું પારનઆવે, જુદ્ધ સંગ્રામ નલો મચા
 વે ॥ ૮૩ ॥ આખર જીત તો નિવૃત્તિ કેરી, જે
 હની પરજાબે અતિ નલેરી ॥ પ્રવૃત્તિ સુતને જે
 ઈંજ જીપ્યા, નવ સાગરમાહેં કદી નહીં ઠીપ્યા
 ॥ ૮૪ ॥ જે જન માનિતી સુતને જઈ મિલિયા,
 તે તો દાવાનલ દુઃખમાં જઈ નિલિયા ॥ એવું જા
 ણીને અન્નિમાન સોવું, પ્રત્યક્ષ વાતેં એ કાયામાં
 જોવું ॥ ૮૫ ॥ દેવતા માંગે મનુષ્ય અવતાર, તે
 નગરી આપણ પામ્યા નિરધાર ॥ માટે નિવૃત્તિ

सुतने जइ मिलवुं, प्रवृत्ति कुंवर संघातें लडवुं ॥
 ॥ ८६ ॥ पूरवें ए कुंवर संघातें लडिया, ते तो
 ग्रंथादिक पुस्तकें चडिया ॥ रखे अंदेशो मन
 मां कोइ राखो, ठए शासतर पूरे ठे साखो ॥
 ॥ ८७ ॥ शेष सरस्वति पार न पावे, तो कवि
 नि बुद्धि केमकरी गावे ॥ पूरो शिलोको कीधो
 ए ठाम, हिवे कहुं वुं कवीनुं नाम ॥ ८८ ॥
 उगणीशें त्रणनो भिंगसर मास, शुक्ल पक्षनो
 दिवस खास ॥ तिथि तेरस मंगलवार, करयो
 शिलोको बुद्धि प्रकार ॥ ८९ ॥ शहेर गुजरात
 रहेवाशी जाणो, वीशा शिरमाली जात परिमा
 णो ॥ वाघेश्वरीनी पोलमां रहेवे, जेहवुं ठे तेहवुं सू
 र शशी कहे ठे ॥ ९० ॥ नथी जाणतो गणने
 जेद, कोइ म करशो माहरा पर खेद ॥ कविजन
 आगल माहारी शी मती, दोष टालशे माता स
 रसती ॥ ९१ ॥ सूत्र सिद्धांत नथी हुं जणयो,
 जाडा रेशमनो दोरनो विणयो ॥ वात साची ठे का
 यामां खोजो, विवेकी पुरुषो विचारी जो जो ॥ ९२ ॥
 ॥ अथ श्री विमल भेतानो शिलोको लिख्यते ॥
 सरसति समरूं बे कर जोडी, वंदु वरकांणो

गिरनार गोडी ॥ जइयें शेत्रुंजे शंखेश्वर दोमी,
 कविताने कुशल कल्याण कोडी ॥ १ ॥ मुरधर
 मांहे तो तीरथ जाजां, आवु नवाही कोटनो रा
 जा ॥ गाम गढने देउल दरवाजा, चोमुख चंपा
 ने उपर गजां ॥ २ ॥ आचल आचारज धरम
 घोष सूरि, जात्राकीधी पण जाणे अधूरी ॥ दे
 उल विण डूंगर दीसे ननूरी, ध्याने बेठा तिहां प
 दमासन पूरी ॥ ३ ॥ सुपनमां कहे चक्केमरी मा
 ता, ढील म करजो तिहां कणे जातां ॥ पोरवा
 ल पाटण विमल विख्याता, होशे बत्रपति स
 बलोजी दाता ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणे आ
 चारज आवे, श्रावक सोनाने फूले वधावे ॥ ग
 हूंली करीने गुणगीत गावे, गुरुजी विमलने वे
 गें बुलावे ॥ ५ ॥ नानडीओ बालक बीहंतो
 आयो, श्रीपूज्य श्रावक आगें बोलायो ॥ जाणे
 शार्दूल सिंहणीयें जायो, बलतो विमलने वातें
 लगायो ॥ ६ ॥ त्रीजुं तीरथ आवु सुणाये, जि
 नालय विना जात्रीकुण जाये ॥ पोरवाड पांखे
 कहेने कहेवाय, बीजे इण ठामें देवुल न थाय
 ॥ ७ ॥ लखमी पामुंतो प्रासाद करावुं, सोना रू

पानां बिंब जरावुं ॥ कागल मातागल लिखिने ली
 धो, बलतो श्री पूज्ये विहार कीधो ॥ ८ ॥ वि
 मलने पूढे कर जोडी माता, आपणे गुरुजीने
 ठे सुखसाता ॥ साधु मुऊकने लिखी इमलीधो,
 देवुल करावा बोल में दीधो ॥ ९ ॥ मतो करीने
 माता विचारे, पृथ्वीनो पति परधान सारे ॥
 रहियें तो राजा विमलने मारे, इम जाणीने गि
 णीया इग्यारे ॥ १० ॥ जरचुं घर मूकी जाइ
 घर जाय, मजूरी करंतां तो मनमे शंकाय ॥
 पेहेरे उढेने पेट जराय, विमल मामा घर मो
 टो इम थाय ॥ ११ ॥ तेणे समे शेठ पाटणनो
 जाणे, बेटी परणावी जोईयें ईण ठाणे ॥ पूढे प
 रगाम ठाम ठेकाणो, एवो सुंदर वर किहांथी
 आणो ॥ १२ ॥ सबला शेहरना शेठनी जाइ,
 बत्तीश लक्षणी बुद्धिवंती बाइ ॥ सबलो वर जो
 ईयें करवा सगाइ, पंडितने पूढे पितानो जाइ
 ॥ १३ ॥ हातनी रेखा देखी अनुसारे, एहनो
 वर बांधे बादशाहा बारे ॥ एहवो वेढालो वाणी
 या मांही, कुण आपणे हो बार बादसाहि ॥ १४ ॥
 विमल मामाने मिलवा गयो चाली, ए बांधे

बादसाह पण आजबे खाली ॥ शेठनी बेटी
 सबली ठे वाली, ए जोईयें कन्या विमलने आ
 ली ॥ १५ ॥ बाईनो जाइ काकाने मामा, साथे
 सगाइ करवाने साहमा ॥ विमलने पोहोता चारे
 ही जाया, मा जाणे माहारे लेहेणायत आया ॥
 ॥ १६ ॥ खत मतांगल माहारोजी दोशे, विम
 ल देशेने दूधें पग धोशे ॥ बेकर जोडीने बो
 लियो जोशी, पाटणथी आव्या पूरण दोशी ॥
 ॥ १७ ॥ खत कागलनी बात न कांइ, विमल
 लावो जू वाटां वधाई ॥ काका मामाने कन्यानो
 जाइ, मेंतो आव्याठे करवा सगाइ ॥ १८ ॥
 किमहीं केता किमहीं कहेवाय, महारे पाने तो
 चूनो न देवाय ॥ पुण्य अंकूरो आगल जणा
 य, अक्षर अबलो ते सबलो इम थाय ॥ १९ ॥
 खेतरवा वाडे विमलनी माता, पाहुणा ठील न
 करे तिहां जाता ॥ मामासुं मिलिया पुढे सुख
 साता, विमलने हाते शुं घडियो विधाता ॥ २० ॥
 मामा साद करे जाणेजा जाइ, आवो इणे चव
 टे इंडुं चढाइ ॥ साथें सालो ते सुकन विचारे,
 विमल बांधशे बादशाह बारे ॥ २१ ॥ पगे ला

गीने नारेल दीधुं, रूपियो आपीने तिलक
 ज कीधुं ॥ सगां जिमाडी बहु जशलीधो, पा
 टण सुधी पण पहाँचाडयो सीधो ॥ २२ ॥
 माताने कहे विमलनो मामा, पाटणना शेठ
 आयाथा साहामा ॥ तेंतो माहरा घरमां न
 समावो, माने बेटो बे जूदां कमावो ॥ २३ ॥ अ
 लगो आसरो आंख जराये, विमल वाठरडां चा
 रवा जाये ॥ अंबाद्र माता परगट थाय, विमल
 ने वर शरनो देवाय ॥ २४ ॥ बिहुं घमी पुठें
 निधान पायो, घरे माता ने पूढण आयो ॥ ल
 हेर गंजीर वडाज मारे, तेनो बेटो किम वाठमा
 चारे ॥ २५ ॥ ताहरें मातायें एक दृष्टांत दीधुं,
 लीले लिखे सरी कुण काम कीधुं ॥ लिखमी पाखें
 नर शोजा न पामे, आपणने अलगा कीधा हो
 मामे ॥ २६ ॥ विमलें माताने रुपैया दीधा, वे
 हलने बलद वेचाता लीधा ॥ मामाशुं मोहो
 टा जूहार कीधा, पाटणना घर समरावे सीधां
 ॥ २७ ॥ विमल कणहटडी बेटो कमावे, राहव
 णो तिहां रमवाने आवे ॥ नेजो मांडेने चोट न
 थाय, राजा रजपूता उपर रीसाय ॥ २८ ॥ गाम

नगरामे न राखुं केणे, खीच खावोने बेशी रहो
 खूणे ॥ आप उठीओ दाखी बल धूणे, राजाही
 चूकयो विमल शिर धूणे ॥ २९ ॥ शाहना गुण
 तो सबला जाणीया, बाण कबाण आगें आ
 णीया ॥ विमल कहे हमेगं वाणीया, घेंस बास
 ना बांध्या प्राणीया ॥ ३० ॥ उजे आकारें व
 लोणुं ताणे, मंथण घुमडे माथुं डोलाणे ॥ तेह
 नी घमी मांहें जेहनो शर जाय, प्रधान पुरुष
 ते तेहनो कहेवाय ॥ ३१ ॥ चाकर तो तेणी घ
 डीयें गुजरी आणे, सामासामीते वलोणुं ताणे ॥
 विमल शरनाखे कबाण साही, बाण निकल्यो
 बेहु घडी मांही ॥ ३२ ॥ ठाकर पूढे कुण कि
 हांथी आयो, राजारो सेवक लेहररो जायो ॥
 जामें जाइनी परें बोलाव्यो, रूडो रजपूतें वि
 मल वधायो ॥ ३३ ॥ राजायें लेखण सिरपाव
 दीधो, विमलने बडो परधान कीधो ॥ शेहेरमां
 सबलो सोजाग लीधो, अधिक आडंबरे विवा
 ह कीधो ॥ ३४ ॥ राजा रलियायत परजा सह
 राजी, विमल वधंतां गलिया सह पाजी ॥ ना
 णे किरियाणें वेहेलने वाजी, सातशें सांडो सो

नाकी ताजी ॥ ३५ ॥ विमलने वखतें दुशमन
 जागे, जाइ राजाने कानें ते लागें ॥ जणियें टी
 पणियें वात विचारी, विमल होशेजी त्रण बत्र
 धारी ॥ ३६ ॥ केणे उपाये येतो न मराय, एहना
 शर आगें आपण हराय ॥ तीरें तरवारे लोह
 नी धारे, इणे वातें न मरे बीजा विचारें ॥ ३७ ॥
 दातण करीने दरवारें आवे, महाराजा व्याही
 वाघण बोडावे ॥ वाघण जाशेने तत्काल खाशे,
 आपणुं राज निष्कंटक थाशे ॥ ३८ ॥ दुशम
 ने कह्यो ते राजायें कीधो, भीमजडुक्यो ज्युं म
 द पीधो ॥ विमलने हुकम वाघणनो दीधो, शा
 हे सदगुरुनो नाम तिहां लीधो ॥ ३९ ॥ चउदे
 पूरवनों सार नवकार, विमले तिहां गणियो त्र
 ण वार ॥ जोर जनावर न करे लिगार, वाघणने
 जाली जाणे मंजार ॥ ४० ॥ काने जालीने रज
 पूता मांही, उजो राजाने आगलें जाइ ॥ राह
 वणो नाठो वाघण बोडी, दुशमनने खावा वाघ
 ण दोमी ॥ ४१ ॥ भीम जाग्यो तिहां आप उ
 गारे, विमल विरमेतो सघलाने मारें ॥ तेणे घ
 डियें साप्ती धर्म संजारे, रूडा माणसने रोडें रे

कारें ॥ ४२ ॥ राजानी रीत परधान सारे, थो
 माहिज दिवस ठे हिवे तारे ॥ मिलीणे जोआ
 वो मुऊने कोणमारे, पाधरवट आवो देखीयें कु
 ण हारे ॥ ४३ ॥ चढा उतरी सबली थाय, वाघ
 ण विमलना वैरीने खाय ॥ मुठ मरोडे मेलो री
 शाय, तुकारो देइ घर सामो जाय ॥ ४४ ॥ च
 हुटा चोपटनो रमण हारे, कहे तोजो तुंमने को
 इन मारे ॥ मुंडे मांग्यां पासा ढलीया पोबारे, सा
 ढा आठने अढी संजारे ॥ ४५ ॥ बत्तीसी बां
 धी शुकन लीधो, घरे मातासुं मतो इम कीधो
 ॥ आपणने राजायें उत्तर दीधो, पाटणमां नघ
 टे पाणी हिवे पीधो ॥ ४६ ॥ आज गयो हुं द
 रबार मां हें, राजा कहे विमल वाघण साहे ॥
 नवकार समरी कानमे जाली, लेइ जइ राजा
 आगल मेली ॥ ४७ ॥ राहवणा मां हें तो रंग दो
 ल घाले, बीजो बाघडी वाघण कुणजाले ॥ हुंतो
 एमज मेलीने आयो, आपण उपर राजा री
 सायो ॥ ४८ ॥ माता विमलने खोले बेशाडे,
 उवारणा लेइ लूण उतारे ॥ सद्के जाउंरे बे
 टा हुं तारे, तुं कुशलें जलें आयो घर महारे ॥

॥ ४९ ॥ विमल वेढालो लटकालो लांडो, के
हर केशरीयो घाहरनो घांडो, चाकर तेमोने पा
टण गांडो, देखुं कुण आवे आपणने आडो ॥

॥ ५० ॥ तिण घडी गाडले नार घलावे, सा
तशें सोनानी सांडो चलावे ॥ पांचशें चाकर ब
गतरिया साथी, पोते पण बेठो ऐरावण हाथी

॥ ५१ ॥ चाल्यो बत्रपति बाजार मांहे, पा
यें लागींनैं एम कह्यो शाहें ॥ एवो परधान पा
टणथी जाय, जीमनुं जलुं कदीय न थाय ॥

॥ ५२ ॥ बेटानी कीर्ति सांजली माता, पाम्यां
परम सुख संतोष शाता ॥ अण हिलीयुं मूक्युं
टली अशाता, चोखां शुकुन थयां ठोडीने जा

तां ॥ ५३ ॥ गायो गांडुंने घोमाने हाथी, कन्या
कुंवारी सात आठ साथी ॥ डाहवो रूपमियो
बोले बांहे पूरी, मृग मालातो उगमते सूरि ॥

॥ ५४ ॥ शकुन बांधीने आगें पगदीधो, जीम
नी सीमे पाणी न पीधो ॥ त्रीजे दिने गढ ता
रंगो लीधो, डहोल पोसीने पोतानो कीधो ॥

॥ ५५ ॥ अदरियो आप आवीने मिलियो, व
धार्ई दीधी दांतें पातलीयो ॥ वशुना गढवालो

बलियो खलजलीयो, कीराम करडोने दाहामो
 पण बलियो ॥ ५६ ॥ बीजा नगरमां वात सं
 जलाणी, पावा गढने पंथे रोकाणो पाणी ॥ वि
 मलनो वधतो परताप जाणी, आठा उमराव
 मिलिया सौआणी ॥ ५७ ॥ आदर देईने वि
 मल वेढालो, वारे विसलदे जूपत जीन मालो
 ॥ डाहो डुंगरशीं काहानमदे वालो, एटलाशुं
 मिलियो अजमेरवालो ॥ ५८ ॥ सोरठ गुजरा
 थ दखणनी जूमि, मालव मरहठ पूरविया रू
 मी ॥ एटला तो वाटें आविने जिलिया, पढी
 बीजाही राजन मिलिया ॥ ५९ ॥ पाटण बोमी
 ने हुआ प्रसिद्धां. सातशें गाम गढीआरा ली
 धा ॥ मोहोटा महीपति चाकर कीधा, डेरा चं
 द्रावे आवीने दीधा ॥ ६० ॥ पोल जांगीने प
 राक्रम कीधो, जला जूमियें वनवास लीधो ॥
 विमलें वसहीनो मुहूर्त कीधो, नेजा रोपीने नि
 शाण दीधो ॥ ६१ ॥ चोधरी चोवटीया प्रोहि
 त पटवारी, विमलने मिलिया सांठाले जारी ॥
 गाम गढने धरती तुमारी, साहेबने हाथे शरम
 अमरी ॥ ६२ ॥ सामा आव्या तेने सिरपाव

दीधा, नगरना लोक नीहाल कीधा ॥ सहुको
 आपणा पादरमां आवे, चोगुणं रूप चढियो चं
 दरावे ॥ ६३ ॥ घर गढ कोट सबला करावे, घ
 णा गराशिया मिलवाने आवे ॥ जालम जोरावर
 वाणियो वाधे, चाकर राखेने देशपण साधे ॥
 ॥ ६४ ॥ मेताने मुजरे महीपति आवे, साह सि
 रपाव सखरा पेहेरावे ॥ घोडा हाथीने गढगाम
 दीधा, राजवी सघला रलियात कीधा ॥ ६५ ॥
 विमल मन मांहे वात विचारे, सबल ठत्रपति
 चाकर महारे ॥ करुं सजाइ कटक सारे, एकवा
 र बांधु बादशाह बारे ॥ ६६ ॥ तंबू ताणीने तै
 यार कीधा, शूर वीर ते संघातें लीधा ॥ केतल
 कटीने चाकर बगतारिया, वांका वेढाला पूरा पा
 खरीया ॥ ६७ ॥ नाल नेजाने नीशाण वाजे,
 हाथीने हलके हाले महाराजे ॥ घोडानी गिरदें
 आकाश गायो, वाणीया रूपें वसुदेव आयो ॥
 ॥ ६८ ॥ दरीयो थर हरीयो धरती धुजावे, जा
 णे गोटोशो चक्रवर्ति आवे ॥ पोतें पालखी बा
 दशाह दावे, कटकोनां काम चाकर चलावे ॥
 ॥ ६९ ॥ एम करंतां सिंधु देशमां आयो, पेहेलो

नगर ठट्टो दलाव्यो ॥ पडीयो पिंडीआ उपर जा
 इ, बापडो घाल्यो बंदीखाना मांही ॥ ७० ॥ उण
 दाहाडे अधिको आरंज कीधो, जांजा जीवने जा
 णीदुःख दीधो ॥ पहेलो पिंडितुं पिंजर घाले, पढी
 बीजाने बंधन चाले ॥ ७१ ॥ आण वरतावी
 आगे पग दीधो, केटले एक दाहामे काबुल
 लीधो ॥ मेहतें मुलतान पढोतानो कीधो, क
 टकें अटकानो जाइ जल पीधो ॥ ७२ ॥ लाहो
 र खुरसाण खंधार बंगालो, बलक बखारो पठा
 ण वालो ॥ तारा तंबोलने ईशणपुरवालो, सूर
 चंद सुधी चढीयो वेढालो ॥ ७३ ॥ आगे तो
 साहामो समुद्र आयो, जेहने पासें तो जोर च
 लायो ॥ देश सघला शरण कीधा, बारे बाद
 शा बांधीने लीधा ॥ ७४ ॥ गामने गढें था
 णां बेसारे, बलीयो बादशाह बांधेते बारे, ॥ वा
 टे वेढालो जाणेज शालो, वडो वागीयो ईडर
 वालो ॥ ७५ ॥ चारेही सरखा बत्र धरावे, प
 ण शाहवडो विमल कहावे ॥ देश जीतीने दान
 ब्रजायो, बारे बादशाह बांधीने लायो ॥ ७६ ॥
 नीमने वसवा पाटण दीधो, चंदरावे आवीने

सामैयो कीधो ॥ रंग रलीयाने तोरण तरीया,
 माताने मेंतो मन सुधे मिलीयां ॥ ७७ ॥ हरख
 तो हेजें हियमे न मावे, उठीने उग्यो साहेब चं
 दरावे ॥ राज्य पालेने दुशमन टाले, बालपणे
 दीधा बोल संजाले ॥ ७८ ॥ गुरें कहुं तो प्रासा
 द करावे, उण रातें कही अंबाव आवे ॥ बेटो
 दीयुंके देवुल करावी, महारे तो जोइयें प्रतिमा
 चरावी ॥ ७९ ॥ खाटला हेठे त्रणेही खाण, सो
 नुरुपूने आरस पाण ॥ धुंधुआ मांडी धातु करा
 वे, आरस आबु उपर चढावे ॥ ८० ॥ एतो ग
 ढगाढो गाडां न चढाय, रूपा बरोबर पाषाण
 थाय ॥ सांजलीने शाह जोवाने जाय, साथें आ
 वुं कहे राणी रीसाय ॥ ८१ ॥ जाणेज कहे मना
 वी हालो, हिवडां कांइ देखामो डुंगर ठालो ॥ दे
 वुल थाय तेडुं बहु सासु, आज कांइ फोकट फे
 रो द्यो फासु ॥ ८२ ॥ नणदलो आवी मामीने
 पाले, हमणां कांइ नटको नाखर ठाले ॥ ठम
 के कहेशे विमल बहालो, देउल थायेने गुरू ले
 इ हालो ॥ ८३ ॥ मामी तो मांडे जगडो इम
 जाजो, साथें हुं आवुं तारे तुं लाजो ॥ समज्या

समज्या हिवे बात सहु जाणी, बीजी परणीने
 थापो पट राणी ॥ ८४ ॥ आप अहंकारी ठत्र
 धरावी, हठवाणीयानी बेटी घर अणावी ॥ मु
 ढे न कह्यो पण मन मांहे जाणी, सात आठ
 बेटी सबलानी आणी ॥ ८५ ॥ जाणेजी कहे
 मामाने जाइ, जिमे नही राणी सबली रीशाइ ॥
 जवाहीर जडावनी पालखी दीधी, शाहे शेठा
 णी संघाते लीधी ॥ ८६ ॥ बंदीखाने जे बाद
 शाहनी बीबी, पगे बीडीने हाथमां बीडी ॥ वि
 मलने आवी अंचुडा देखामे, शाह एहवा अ
 जमेर पाडे ॥ ८७ ॥ हुकम हुन देन बंदीखाना
 ठोडी, बादशाह पेरावे बहु सारी साडी ॥ गढ
 गाम गरास थोडासा दीधा, शाहे ठत्रपति चा
 कर कीधा ॥ ८८ ॥ इम करंतां आवु उपर जा
 य, खार्गे गढ देखी खुशीयाल थाय ॥ डुंगर सा
 तपुडो सबलो देखे, ए आगल बीजा जाखर-
 शे लेखे ॥ ८९ ॥ कहे कोटनो राजा देखामो, आ
 नमी आखे अणी सीरोहीवालो ॥ पूरो पाखरी
 ओ पहाड कालो, चांपले लीनो ठेल ठोगालो
 ॥ ९० ॥ पाननुं बीडुं पाए मेलीजे, पूरो नाणो

तो पल्ले घालीजें ॥ दुआ मांगीने देउल कीजें,
 ए गढ अहींआज अजरामर कीजें ॥९१॥ वि
 मल वेढालो सबल हुओ, दाण देइ मांगे देह
 रानो दुओ ॥ शाहे आगल वात विचारी, देह
 रानी नीरुं सीरोही सारी ॥ ९२ ॥ पांचसो घो
 डाने पुणसो हाथी, बे सांढो जरी सोनानी सा
 थी ॥ जेट लेइने जाणेजो आयो, रुमे सुठामे
 पायो रोपायो ॥९३॥ आप असवार होइ जोवाने
 जाय, जिमणे काने जिनावर गाय॥इणेठामे आज
 रंग रोपाय, कामने नामे अजरामर थाय ॥
 ॥ ९४ ॥ रेवत राखे जालीने वागें, हाथ जोमी
 ने हुकम मांगे ॥ समी धरतीने सालनहीं आगे,
 देलवाडे देवुल करवाने मांगे ॥ ९५ ॥ गवरी पु
 अनो आदेश लीधो, नवमण नैवेद्यने खवराव्यो
 सीधो ॥ शाहें हाथशुं कुंकुम दीधो, रंग रोपीने
 मोहरत कीधो ॥ ९६ ॥ देव नमीयोने देवुल था
 य, लाखो गमे तिहां लोक कमाय ॥ विमल वि
 शेषें जोवाने जाय, गज रथ देखीने गरवें जरा
 य ॥ ९७ ॥ शाहे सीलालाट वधारया जोरे, मांख
 णनी परे पाषाण कोरे ॥ सोना रुपाना सिरपा

व दीधा, आबु उपरे तो ए काम कीधां ॥ ९८ ॥
 थंजा कुंजीने जरुखां जाली, तिन तोरणने उप
 र अटाली ॥ पोल पताका चौकी चोसाली, ना
 हनी पूतली नाटारंजवाली ॥ ९९ ॥ परिकर पं
 चासण गंजारे ओरे, मुल मंरुपें जालमजोरे ॥
 नरवर गजरथने कीचक कोरे, मनना मनोरथ
 इणीपरें पूरे ॥ १०० ॥ काम कोटी गमे केटलुं
 वखाणुं, शिलोका मांहे संबंध किम आणुं ॥ वि
 मलें विशेषें खरच्युं जे नाणुं, त्रीजुंही तीरथ थ
 युं ठे ठेकाणुं ॥ १०१ ॥ देवुल निपाईने प्रतिमा
 जरावी, प्रतिष्ठा पूज्यने हाथें करावी ॥ इंडुं च
 ढावी उजमणो कीधो, विमलें लिखमीनो लाहो
 इम लीधो ॥ १०२ ॥ जाणेजाने गढ आबु न
 लावे, आप चढीने चंदरावे आवे ॥ तिहां पण
 देवुल नवो निपावे, नेमनाथनुं बिंब जरावे ॥
 ॥ १०३ ॥ अंबाजीनां तो प्रासाद कीधां, बीजा
 ने बली बाकुल दीधा ॥ मनना मनोरथ सघला
 इहां सीधा, बारे बादशाह बीरुद लीधा ॥
 ॥ १०४ ॥ पाटण ढोडीने चंदरावे आवे, खाण
 पामीने बत्र धरावे ॥ बादशाह बांधीने दंड जरा

वयो, आवु उपरे देवुल कराव्यो ॥ १०५ ॥ पो
 रवाड पराक्रमी पंचमें आरे, नाणुं खरचे ने न्यात
 वधारे ॥ पंचायण सिंहें बांध्या बादशाह बारे,
 एक सुपुत आखो कुल तारे ॥ १०६ ॥ केहेशे
 धाणीयो कांड वखाणो, खाण पामीने खरचीयो
 नाणो ॥ एहवो कुण हुओ रावने राणो, तिजो
 तीरथ करे ठेकाणो ॥ १०७ ॥ कोइ कहेशे क
 वितायें काचो, सूर वीरने सबल साचो ॥ विम
 ल वेढीयो तन कह्यो आगो, कटकीने कामे न
 जागे पागो ॥ १०८ ॥ चढीयो टलीयो ने संग्रा
 म कीधो, बीजे शास्त्रें संबंध प्रसिद्धो ॥ जुद्धनी वा
 त जति न वखाणे, संबंध संक्षेपें थोमोसो आणे
 ॥ १०९ ॥ एक सुपुत्र लेहेरनो जायो, विमल
 शास्त्रमां एक वखाण्यो ॥ मनना मनोरथ सघला
 ते सिद्धा, बारे बाढाइनां विरुदतो लीधां ॥
 ॥ ११० ॥ बीजुं वरदान बाण विद्यानुं, आप्युं
 अंबाये सत्तर धानुं ॥ पांच गाज लगें वहेजो तुं
 मारे, वाघण मारीने परताप सारे ॥ १११ ॥
 दश अठ्याशी समय दीपायो, विमले आबुनो
 तीरथ जगायो ॥ कीधी थापना धर्मघोष सूरें,

आवे संघ तिहां बहुबल पूरें ॥ ११२ ॥ उपे
 वनराइ चार अठार, आंबा चापानो न लहुं पा
 र ॥ आवु न दीठो तेहनो आवतार, निःफल
 जाणजो ते निरधार ॥ ११३ ॥ गजपति घो
 माशुं विमलशाह घोडे, उपे अदनुत रूप संजो
 डे ॥ फूल केतकी आवुगढ मांहें, परिमल पूरेने
 सीरोही जायें ॥ ११४ ॥ नूत नंदने मुनिगण इंदु,
 (१७८७) ज्येष्ठ शुद्ध आठमवार दिणंदु ॥ रूमो
 शिलोको एह रचायो, खेडे हरियाले कलश च
 ढायो ॥ ११५ ॥ हीररत्न सूरि वंदी गुणधार,
 उत्तम ए में कीधो गुणधार ॥ एकवार तो आवु
 गढ जोजो, हिम्मत राखी समकेति होजो ॥
 ॥ ११६ ॥ जाव धरीने एह जे नणशे, लिखशे
 गिणशे ने सनामां गुणशे ॥ वाचक उदयनी एह
 वीवाणी, सुद्धि सर्दहजो शुच फलजाणी ॥ ११७ ॥
 ॥ इति शिलोका संग्रह समाप्त ॥

(शिलोका संग्रह जाग २ जो उपेष्ठे)
 (किंमत ५ आना)

जैन धर्म संबंधी गापेला पुस्तकोनु सूचीपत्र

- १ जैन धर्म ग्यान प्रदीपक पुस्तक किंमत १॥ रुपया.
- २ श्री जैन धर्म सिद्धांत सार पुस्तक किंमत १॥ रुपया.
- ३ श्री जैन धर्म ज्ञान प्रकाश पुस्तक किंमत १२ आण.
- ४ श्री रामलक्ष्मण चरित्र कथा युक्त किंमत १॥ रुपया.
- ५ चंद्रराजाको राम किंमत १ रुपया
- ६ लक्ष्मण बोध नाटक किंमत १२ आण.
- ७ श्रीपाल राजाकोराम चार खंडको किंमत २० आण.
- ८ अंजनाको तथा राणी पद्मावतीको राम किं० ८६ आण.
- ९ मानतुंग मानवतीकोराम किंमत ८६ आण.
- १० हंसराज वछराजको राम किंमत ९ आण.
- ११ सतधारी राजा हरीचंद्रकी चोपाई किंमत ४ आण.
- १२ धन्ना साळजद्र शेठकी चोपाई किंमत ४ आण.
- १३ मंगळ कळसकी चोपाई किंमत ४ आण.
- १४ देवकी राणीको राम (छे जाइने राम) कि० ४ आण
- १५ लिलावती राणीकी चोपाई किंमत ४ आण.
- १६ अमरसेन जयसेन राजाकी चोपाई किंमत ४ आण.
- १७ चंदन मलियागीरीकी चोपाई किंमत ४ आण.
- १८ परदेशी राजाको राम किंमत ४ आण.
- १९ कयवन्ना शाहको राम किंमत ४ आण.
- २० महिपती राजा अने मतिसागर प्रधानकी चोपाई किंमत ४ आण
- २१ कानंड कठीयाराकी चोपाई कर्म बंधन राम किंमत ८४ आण
- २२ स्नात्र पूजा तथा बीस स्थानकनी पूजा किंमत ४ आण
- २३ स्तवन सजाय संग्रह प्रत्येक जाग किंमत ८४ आण.
- २४ मेणरहयानी चोपाई किंमत ३ आण.
- २५ पांचपदारी मोठी वंदना किंमत ३ आण.
- २६ पंडित देवचंद्रजीमहाराजकृत चौबीसी किंमत १॥ आणा
- २७ पंडित आनंदधनजी महाराजकृत चौबीसी किंमत १॥ आणा.
- २८ श्री जैन धर्म काव्यमाला (आठ जाग) किंमत १ रुपया.

